

चंदा हंदी रात^१

(राजस्थानी कहाणिया)

सूर्यशकर पाशीक

विकास प्रकासन

बोकानेर



राजस्थानी भाषा, साहित्य एव सस्कृति अकादमी,
बीकानेर रै आर्थिक संयोग सू प्रकाशित

© लेखक

प्रकाशक—विकास प्रकाशन, ४ चौधरो क्वाटर,
म्टेडियम रोड, बीकानेर (राजस्थान)

छापोग्मानो—प्रदीप प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
सस्करण पैलो—१६६०

मोल - फकत चालीस रिपिया

थोड़ीसी'क वात

“चदा हदी रात” मे म्हारी एक दरजण का'ण्या पखडीजी है ।
आ छाडा और पण का'ण्या हैं, व आगैसा भळ कणाई पाठका रै
सैमू डे करीजली । अ का'ण्या' किस अलै तलै री हैं इण रो
निरवाळ में खुदाखुद नी कर'र इण री तात तो खरी मीट आळा वै
कु ताळू हीज करैला अर जणा ही आ बात ओपती लागली ।
म्हारै मन मे आ बात ठेट सू हीज रैयी है क में देख जिसो
का'णीकार नी हू, म सू जिसी लिखणी तावै आई, लिख गळी
है, तोहीपण अ इतरी फोरी-पतळी नी है । वाचण आळ रो टेम
अव्यरथो पकायत ही नी जावैला । कई न कई पल्ले ही पडैला ।

शहरो का'णीकरा रो जिण दिस ध्यान नी गयो है, में उण
विषयवस्तु नै अचेडी है । किस तक खखेरीजी है, इण रो फसलो
पण आप भायै हीज है ।

लखू मानखै रा अलेखू रूप हैं, कितासी'क रूप स्यात
आ का'ण्या मे उकेरीज्या है । तापच्छे हथौटी-हथौटी रो फरक
हवै । आ मे ओ फरक विलजरूर लाभेलो ।

म्हारो इण बात माय स्यात घणो जोर लाग्यो है क
राजस्थानी भाषा आपरै सरै सिणगार मे सज्जै वज्जै । आ

लिखार री बडाई नी हुय'र उण रो ओ कतव्य बाध बोल
 अर जद हीज राजस्थानी भापा सारू उण रँ सही उणियारै मुजब
 लिखण री खेछळ करीजी है । आज राजस्थानी भापा वेई इण
 री घणी चित्या है कै वा आपरै मानण जोग रूप मे प्रगट-ओळ
 पिचौळै रूप मे नी ।

आ का प्या मायकर राजस्थानी भापानेँ जे चिनसो'व पण
 लाभ हुयो तो म्हारो लेखण जोग रूप जाणीजैला ।

म्हारै इण वात री अणूती हो पीडा है कं प्रस भूता री म्हार
 प्रफ सशोधन धक देखतारी आरया चु दीजी हैं जिकी पणनी हुवणी
 चाहिज ही । राजस्थानी रा जाणीकार तो के ठा क निग राख'र
 पढ लेवैला पण नू वा नायदा सारू ओ फोडो ही है । इण कमीन
 धकल सस्करण मे सुधारो जावैली । हैण तो मनै भाफी ही मागणी
 पडला । इण पोथी रँ छपण मे राजस्थानी भापा साहित्य एव
 सस्कृति अकादमी, बीकानेर सू जिकी विताऊ सहायता मिली है
 उण रो म्हार घणो गुण किरियावर हैं ।

ओ पोथी में म्हारै अ गतू बेली सुरगावामी श्री अद्भुत शास्त्री
 ने सख कोडा समरपो है जिका छेल दिना मे राजस्थानी भापा रा
 लू ठा समथक घणग्या हा ।

राजस्थानी पाठवा सू मे ओ भरौसो बाधा'र, चालू वं वं
 इणन साडेकोडे प्रगेजला । वात, इण सू वती'नी ।

बिनतगर-

सूर्यशकर पार्शीक

समर्पण-

श्री पोथी-

जिका राजस्थानी पत्रकारिता मे दो पग आधा
लता थका राजस्थानी भाषा री 'कुरजा' जैडी पत्रिका
गढी, राजस्थानीने वलोवली सवेग धके टुरण सारू
र उणारे वधेपे वेई सम्मेलन तेवडधा अर जिका
राजस्थानीरो भलप मे जिया-भरघा उणी हिये रे
तालू, सुरगावासी श्री अद्भुत शास्त्रीजी री चितार मे
रणे मान सू समरपू ।

सूर्यशंकर पारीक

काण्वा रो पडत—

१- रू टो	६—१६
२- निमवो सुभाव	१७—२२
३- तैलवानो	२३—२८
४- गायव्या रो मेल	२९—४२
५- सपादक	४३—५२
६- रामूधायलो ,	५३—५६
७- भाल ,	६०—६६
८- लाखीणी ,	६७—७१
९- लकडचा रो लादो	७२—७५
१०- वेटै सूदो व्हू	७६—८६
११- फगडल	८७—९४
१२- सपादक री पू छडी	९५—९७

खूटो

“ गुवाड रँ बीचोबीच, पछे जावक पगार मे किसी रो कुजरबो खू टो आखँ गाव री आस्या मे रडकँ हो । आख मे रेत रो नावसो रावडियो पण रडकतो दोरो लागे तापछ अ्रोतो खू टो, होयर रडकँ हो । खूवँ हो । रडक कोई मामूसी नी ही । गाव मे आज किए रो मकदूर कँ इण खू टन कोई उपाड र अळगो नाखँ । इण खू टन उपाड र नाखणँ री उरमा किए मे हीज नी ही । गाव मे एक हीज इसो आदमी हो जिको जे धार लेवतो तो इण खू टन उपाड र कडखँ वगाय सकँ हो पण निजोरी री बात क वो मुसाफिरी माथ आसाम कानी गयोडो हो । उणने मुसाफिरी माथे गया न दो बरस हुवणने लागा है अर आही दो बरसा मे गावर दाने मिनख जिके रो नाव “डागी” हा, ओ नाव ‘यथानाम तथा गुण’ आळो हो । डागी रो अथ है जिणरे हाथ मे लोह जडी अर पोला बाघी गगारामी’ हुत्रँ का ‘मिरजापुरी’ हुवे, ओ बेजोगतो अर कालो खू टो गाव री गुवाड मे अघ बिचाळे रोप राळयो ।

डागी र जद खू डको भँस हो जणा वो उणने इण खू ट सू पेखडतो हो । अवं तो खँर, डागी री भस ही गई गुवाई, माग रँ भाडे ।

डागी र देखादेखी गावरै बीजें लोगा पण आप-आप रा खू ०
 रोपणा चाया गुवाड मे परा डागी आपरं खू टै रै वरोवर हीज ना
 अछगै-आतरै भी किणोनै सू टा को रोपण दिया नी । जे किणो
 'च्यार लाठी चौधरी अर पाच लाठी पच'रवैम मे अठैखू टो रोपणा
 तेवडियो तो डागी आपरी डागपटेली रै पाण उणनै आपरी खू डका
 भस आळो पोठो घालार अँडो घमकायो कै ता पछै उणरो खू टा
 तो रोपणो बडसै रैयो जे बठै ही उणरो डोको पण रोप्योडो हा
 तो उणनै भी उण उपाड ओळातरै नाख्यो अर भळै खू टो रोपण
 रो सू स खाली ।

पैली कैयोनी कं डागी रै खू टनै उपाडनै रो बात तो आयो
 रैयो किणी आपरो पण खू टो गुवाड मे को रोप सक्योनो । डागी
 रो आखै गाव मे दाबो जमग्यो । मिलै जिको ही थरका करतो
 डागी रै इण काम रो सरायना कर अर अँडो भाव दरसाव कै
 'भाईजी, आप ज्यू करा वो साव याय वाळो है । अँडो मू ड मायै
 बडाया सुणार डागी फुरळीजण न लागग्यो । बो 'चाल ए छाया
 घडीक नै आळ '।

गाव मे अँडे सजोरा आदम्यारी ताई कमी नी हा कै डागी रै
 खू टनै उपाड र परिया नी नाख सक पण आदमी कनै खाली डोल
 रै हाग सू ही तो सगळाकामनो नीठै कई तो बीजो जोर पण आदमी
 कनै हु वणो चाहिजै । कई वारलो तो, कई मायलो जोर । खाली
 इकतरफे जार सू आजरा दुनिया मे काम नी चाल । डोल रो जार

आज घण्टी मतलब नी रागै । आज जोर रा मायना बदलग्या है । जिको पण जोर किणी कनै 'काट-तोल्योडो' हो नी । अर उण विना नीतो खू टो उपडतो हो अर नी ही आपरो खू टो रुपतो हो ।

डागी जिकें दिन ओ खू टो गुवाड मे रोप्यो हो उण दिन आखै गाव मे डागी अर इण खूटे रा भरपूर जिकरो हुयो हो । लोगा इण सारु भोत ही जीभ लपराई अर दाता घिसाई करी ही । लोगी छानं छलकें डागी री निन्दरा मायं उतरी ही । बूढा-बडेरा आपरें मायं नै गोडा विचें देयर अपसोच वरें हा पण खुलर सामनै आवणरी हिम्मत किणी मे नी ही घण्टी के डागी रें खुदाखुद घर मे भी उण दिन तैतसो तळतळीज्यो हो । पण बात घर आळारें पण हाथै बाथै को रयो नी । मा-बाप तो वापडा बूढा जरडा हुयर रैग्या हा । मा-बाप री वरजना डागी आपरें लवै ही नी लागणें दो छैकड डागी सागोडो ठरका र गुवाड मे खू टो रोप हीन दियो ।

अठीनै गुवाड मे खू टो रोपण सारु सडको उपडती हो अर उठीनै डागी रें आगणें में खाडो पडतो जावै हो ।

खू टो रोपण आळी बातनै लेयर आंखो गाव काना बाती करे हो डागीरो बाप पण रोळा करे हो । डागी रो बाप कव हो क "डागी ओ खू टो के रोप्यो है, म्हारो जमारो बिगाडयो हें म्हारा घोडा भाडीजणा है मने तो मानखै मे धूड पडतो लागे है" बाप नी जाणें और काई काई कँवतो हो । डागी री मा च्यार-च्यार चोसरा नासै ही । भरर-करर रोवै ही । उण री जोडायत तो आप ने

ओढ़णियो ऊधो नाख र ओढ़ सियो हो । आ वात सँ जाणै क इण तक ओढ़णियो ओढ़णा सुहागण भागण सारु वसूण हुवै । पण जिके रो उपाय के ।

डागी र बाप रै मन मे रैय रयर घिराळा मारता हा क “घर मे जोमण सारु पोतळ सी बाजरी है । समँ सारु घर मे घोळ धार हं भावणनै चावड-धावडमोटी आवडी रो खेत है । वसण ने लू ठो गुवाडो है गुवाडै लारै बाडो है । बाड मे एक नी दस भैस्या पखडी जाय सक, बाडँ मे एकनी दस खू टा रोपो, वरजण आळो कुण पछे डागी वेसुरो काम क्यू करै । किणी रो आगळी सीध मे क्यू आवै

बाप बोलतो जावै हो ‘ घर है, घर मे दरगाह सो माटो दर-वाजो है । गुवाडी रै मीजान रो हीज मोटो फलमो है जिके न जडया पछे हरे किसना भजो सुई नै सचरणनै जागा ती” । डागी रो बाप आगली-पाछली सोचतो, विचार कर हो क ‘ आज तो हाथ फोरयो फुरै जिसो सरतर है” ।

बापरो सोचणो हो “ डागी गुवाट मे खू टो रोपसी अर घर आळो खू टो एकन एक दिन पकायत छुठमी । कत्रत मे कैयो है क ‘बुरो है गाव रो राडो’ । आपरो ओ खू टो रोपणो साव आच्छो नी पण उपाय के कोई किणारी मानै जदनी” ।

आखँ गाव मे खू टै रो वात चाल खडी रैयी ही कँ आवता-जावतो कोई न कोई इण खू टै मे आम्बर पडसी । रात बिरात इण मू टकरा र किणारा न किणोरा दात भागोजसी । अठै खू टा

रूपण आळी वात बडी कुजरबी है ।

डांगो सारु इण तक कैवणो-सुणानो अव्यरथो हो, उणारा मा-वाप तो बूढा जराड हुयग्या है जद अर गाव आळा रो के 'हाथी रँ लार इयो ही गडक भूस्या करे' । इया सोचर डागी किणी नँ धँलँ सैत पण धारतो नी हो । आखर टागी खू टो रोपर हीज रँयो ।

एक दिन इणीज रू टाळी जागा पचायत आळो अर रावळियो भंसो आपस मे जुट पडया । पैला तो रावळियँ भस हुडो दी जणा पचायत आळो भसो खू टँ मे पेट सुवाणी पडयो जिकँ सू उण रो केई केई भा मे पेट चीरीज्यो पण जद ग्वार खायर पचायत आळो भसो ध्यारू पगा सू ऊभो हुयर दै खू टँ मे इस तक निराताळ रा खू ट रे माय पडणँ सू रावळियँ भसे री लारली पासळया भाजगी जिकँ सू वो जावक वेकामो हुयर रयग्यो । जिया आजादी मित्या पछँ राजावा रा गड कोट । आतो हुई भसा री बात पण एक दिन बात-पर बात चाल पडी अर दो जणा फोटअर स्याबासीरी भारणी भणता आपस मे चुटपडया अर टिप्पा टिप्पी मे एक जणो खा टिपो -र जा पडयो खू टँ मे जद वापडँ रा आगला दात गिटीजग्या । लाग रय-रय करता रँयग्या । जिया जवानी गया पछँ मिनख । जा बाद गुवाड म हथार्ई-ब्रताई हुवणी ही बन्द हुयगी । लोग आ सोचर गुवाड मे बठणो बद कर दियो कै नी जाणँ कुण कणा आपस री खीचाताण मे जा टकरावँ खू टँ सू । खू टँ सू टकरावण

रो मतलब है आपरो नुकसान करणो ।

अब तो खू टो सगळा री आख्या मे हीज नी हिये मे चुबण नै लाग्यो पण बा ही सागण री सागण बात पण कदेन कदे सेर न सवा-मेर मिल ज्याया करै ।

सामले घर रो छोरो, मोटियार जुवान, छाया कान देखर चालै पण साव आळो, जावक जाँडो बिना वाही काढयोडो । बापरो किसे ढव चातै, इण सू साव अणजाण । ऊर्म काना घर खायोडो जणा पण शरीर सू सभोरो मल्ल जिसो लाग । डील मे हागो इत-रो कै भसे रा सीग उपाड नाखै । बापरा सगळा लछै । इण रो बाप भी नो किणन की नी समझतो हो पण बिरा मिनखा आळै गुणारो गुमानी । सो छारो एक दिन जा खू टै सू खस्यो । लोग समझायो कै थारो इण खू टै सू खनणो ठीक नी, थारो बाप ग्रठ हुवतो तो ओ खू टो ही नी रुपतो पण वो आपरै धन्वे सू आसाम गयोडो है जद तू इण सू ना खम । छोरे न वू धी चढगी जणा उण किणी री मानी नी । जा खस्यो डागी रै खू टै सू । खू टो कई दिना पलो सू ह योडो हो, ख टै री नीचली गुळी गळगी हा । छोरे र थोडी धधू एी देवणै सू हीज तू टोजी जाय पडयो आयो ।

डागी न जद ठा लाग्यो जणा वो पग जूती घालै जितरी ताळ मे खू ट कन आयो अर खू टैन ऊपडयो देख र घणो फू फायो अर देजार-त्रेकार कयो कै जिक्का म्हारै खू टै सू खस्यो है अर ऊपाडर अळगो नाख्यो हँ उण न चापर ही ठा पडसी कै खू टो ऊपाडया के

हवाल हुआ करे। म्हारे खू टैन उपाडणिये काळनाग नै धूळियो वायो है।

दूजे दिन छोरै रो मा आपरै पळीडे मे पाणी पौवण नै गई तो एक जणे ओठळतो भीतलो ऊपराकर कियो—“ल्यो थारी चिट्टी’

चिट्टी (मरयोडे री गावा मे चिट्टो बाजे) रो नाव सुणता ही छारै री मा माथे जाण बजराक पडयो हुवे। वा हाकी-दाकी रेंयगी काई गजब हुवण रै अ देसें सू वा “चिट्टो-चिट्टी” करती रेंयगी। चिट्टी लावणियो चिट्टी भला र वो जाहै-वो।

छोरै री मा हिम्मत बाध र एक पढसरी कने गई। चिट्टी मे समाचार उघडया के “छार रो बाप दिन तीन पैली समाइजग्यो है’ छोर बारै माथ आपरै मूडे री राख भाडण साह खरच तेवडियो। पचा रै दूहै मुजब वास पळिये रो मूडो अठावण सात् चावलिये रा दाणा राध्या। वास पळियो अर आयोडा भाई गनायत जीमण न डक्या, इतरै मे उगुणो दिणा सू खेह उपडती निजरा चढी। लोगा रा मूडा काळा पडग्या क्यू के उण दिना मरयोडे रो खरच करणो साय वद हो।

थाणेंदार छोरै सामे वेत ताणतं पूछया - “साची साची वता लाडू कठे लकोर राख्या है?”

छोरो विरगरावना बोल्या “बाप रो सू स मे तो आ चावला छाडा की नी वपरायो है। आपने जिके लाडू बणावण री शिका-यत करा है नो वा साव कूडो है। अँ चावळ ही मै नेम परवारकर नी राध्या है। वासर टावरा अर भाई गनायतन जीमा र रीतरो रायता करयो है।”

घाणैदार सगीन तपतीन करण सारू पचान अर छोरे मचकाव हे इतरें में अचाचूक रो अर छोरे र बाप घाणैदार जीन ज रामजरी करी अर सगळो भेद खोलर बतायो । छोरे रो बाप पैलायकं सरपच रेंयोडो हो अर घाणैदारजी सू आपसी मुनाकात ही 'अबंती थारा बाजै कं म्हारा'। घाणैदार रो आहो वत डागी माथ उवकीज ही । डागी रो सगळो पलमो चांडे आयग्यो हो कानून रो लह पडती धारा मे डागी रें हाथो मे बडं राज रो गण परयोडो हो । या ऊठ रें लारें नाशें हो । अजे थाणो रो हड मुकाम कोस तीन आघो हो ।

छोर रें मू डे रो राख तो के ठा क बाप आसाम सू आयग्यो नाखी पण डागी र मू डं माथे जिको काळू स थेथडिज्या वी जाणै किता बाडा खेडा खाग्यो । लोग एक दिन खू ट रो चर्चा करी ही व ही आज डागी र घर रो तलपट बाचें हा ।

काल रो रात अर आज रो दिन डागी रो खू टों उपडयो जको तो ऊपडयो हो पण आज आख गुवाड मे नू वा नूवा खू टा रुपग्या हा अर लोग आप आपरें खू ट रें पाण नाचें हा । जद ही कॅयो है टोगडियो खू ट रें पाण नाचें ।

निमधो सुभाव

छोटूलाल जद कदेई आपर गाव सू सहर आवतो तो वो सीधो म्हारै घरं आय जावतो । आ सगळा जाणें के सहर मे वात-वात रो पइसो लागें । मकान लेवें तो मकान रो भाडो लागें । छोटी मोटी कोटडती लेव तो उणरें डोळ सार भाडो लागें । जे कोटडी रें जडन सारू ताळो लेवें तो उणरो भी भाडो लागें । रात नें सोवण सारू माचो लेव तो माचें रो भाडो लागें लागो लूगो, पण जे साल छै महीना मे कदेई-सी काम पड तो के ठा छोटूलाल जैडो मिनख भी भाडो तोडो भोग लेव, पण महीने मे दो दो, तीन-तीन सू घणी हेला जद रेंवणो पडै जणा पण भाडो भोगणें सू तालर सो कूटीज जावें ।

आ ही वयू, होटल मे चाय पीवें अर जै बासं मे रोटी जीम तो उणरा सैत-सा पइसा लागें, अ पइसा लागें जिवा तो लागें ही इण रें परवारकर निरी जिन्सा रा दाम लागें । सहर मे कुण किरणरो सोरी-भीरी कुण-किणी रें बदलें फोडो भोगें । सहर मे तो वन-वनरो काठ भेळो हुयोडो हें । सहर रा गाव आळनै भोटू समरुं अर गाव आळा सहर आळनै काचा । मतलव आी कें सहर आळा दिखणादा तो गाव आळा उतरादा । छठ अमावस रो भेळ हुवें तो गाव-सहर आळा रो भेल ।

पण उपाय के । छोटलाल सहर रो घडो रसियो क उणन सतवाडिय सहर मे भावणो ही ज पड । मुभाव पढियोडा छटना करे ? छोटलाल कणई बीमारी रो बोनो लेय र कणई निस पतर-लेवण न भावणो रो वानो लेय भर कणई हाकम साहब बुलायो है वानो लेय र सहर भाव । पण क्णिणी न क्णिणी वाने स उणन सहर रो काळी-काळी सडवा पर खल्ला घसणा ही ज पडे ।

छोटलाल भापर गाव सू भाय र, भापरो कोई जरुरी काम सळटाय र सीधो म्हार घरै भाय र दो माचा माथ कमर खोल । खाल क्यू कोयनी, सावण न माचो बिद्धावण नै पथरणो, सिराथियै देरणन गीडवो भर ओडणन दूध सी धोली चादर मिल ज्याव । चीमासो हुवे तो माछरदानी तकायत मिल परी । पीवणन म्हारली धोळी रो धार, जीमणन पीतळ सी चदासीरी बाजरी, तीवण भर वो काचरियो दही । एकर तो देखे तो देवतावा रो पण मन जीमण सार ललचावणने लाग ज्यावे छोटलाल तो आखर चीज ही ज कोडी'क ? इतरे सू सरै तो ही जाणा, पण धूवो काढणने उणने पाच सी पताळीस रो बीडिया चाहिजे, सिगरेट पावे जणा स कंवणा ही क वाई ।

सहर मे निमटण रो सगळा सू धरणो फोडो, पण म्हार इण मकान मे तळभाड जाजर भर हावण-धोवणने टकी आळी टू टी जकी बगोडा करती चाले । अडी सगली सुविधावा, भळे बीजो काई चाहिज ।

छोटलाल कने सू मे और-और वाता रो सरावणा कोनी सुणो पण तळभाड जाजर भर हावण-धोवणने पाणी रो मोकलायत

रो वडाई वो म्हारें सामें करतो घापे ही कोयनी । बात-वात मे वो मनै कंवतो कै—“हू थारें घरें खाली न्हावण-निमटणरी सुविधा खातर फकत आवू, नातर सहर मे रातबासो तो हू दाय आवै जठे ही लेय सकू । लोग आपरें घरें राखण खातर म्हारें वास्तै पिऊ-पिऊ कर, मनै देखै जठेई दोळा फिर जावै अर 'म्हारें घरें चालो-म्हारें घरें चालो री पण भारणी उगेर देवें । हू पण थो सू भेळै कदेई आसा' कंध-कंधर केई हारा निठासी पिड छुडाऊ अर पाधरो थारें घरें आऊ । न्हावण-निमटण री वडी मौज ।”

समै जोग री बात कै मनै पैला आळो घर वदळनो पडयो । पैला आळै मकान मे जिको सुभीतो हो अर उण मे जिकी सुविधावा ठावी ठिकारुं ही, व पण इण मकान मे ताई ही कोयनी । श्री मकान तो खाली सिर घसोवणनै एक अंडो हो । छोटूलाल सातवें दिन इण मकान मे भी कुत्ता घुसावतो आयो रैयो ।

पैला आळै मकान मे जठे कमरें-कमरें मे विलायती टाल्या विडयोडी ही, उठे इण मकान रो हैठलो आगणो गवा री गौर हुवै जिस तक रो हुयोडो हो । उण मकान मे जठे ठाव-ठाव च्यार-च्यार फुटा ऊंचो वारया खुलती उठे इण ढमढेर मे अंडो अधारो, जडो उमर कंदयारी फाळ कोटडिया मे रंया करे । उण मकान मे जठे आज ३ चले री पाणी, विजळी, पखा अर दूजी सगळी सोराया हो इण पण नू बोडे मकान मे फुटयोडी भीना, जिका रा लेवडा उवस उवस र आवै ही । ऊतरें, ऊदरा रा विल जिका मे ऊदरा री लगाटर बंडे अर नीसरें अर छिपकल्यारी कनारचा, जिकाने देख'र मिनख रा 'जी' मिचळायण नै लाग ज्यावें ।

कठई कसारघा अर कठई छिलोडघा, जिकाने पण देख'र आदमी
ने घड घडी आवणने लाग ज्यावे ।

छोटू लाल इण मकान मे भी पूछतो-पूछतो आयो रैया । खेर
सला, आयग्यो तो आयग्यो । जिसी म्हारे कने सुख सुविधा ही मे
उणने दी परी । रात वासे वो रैया परो । पण पैला आळा मावा
कठे ? माछर खाया, कीडघा लडी, अक्क अखोरड हो पडघो रणा
पडघो, अधारे मे ढमढेका मारणा पडघा, सुवारी वेळा ऊठ न
फेरवाडी मे जगळ जावणो पडघो अर उठे सरम नाखर, नीचा
ढूढ घातर ढूगे सू ढूगे अडा र बैठणो पडघो । जोर के कर
पैला आळी-सी वाता अठे पण रैया कोयनी । जाणे सुविधा
लारळी गळया मई परी हुव ।

पकायत ही ज अक्काले छोटू अठे दुख पायो ।

रोटी वेळा छोटूलाल रोटी जीम लियो अर आपरे पाप पुन
लाग्यो ।

मे जाण्यो, छोटूलाल पैला आळ घरे भरोसे अक्क के अठ
आयग्यो पण आग सारू स्यात ही ज अठे दुख पावणन आवे । वो,
आप केवतो ही ज हो के उण र अठे रवण-सवण री ताई कमी
कोयनी' वापडो भळ पण अठ क्यू आसी ।

पण के रो ! वो तो दूज फर भी म्हारे अठ आय घमक्यो ।
मे उण ने देख र मन मे विचार करचो क छोटू अठ दुख पावणन
क्यू आयग्यो ? जद क उणर अठ निरी ही जागवा सोवण
उठणने है । एकर तो अंडी विचार म्हारे आयो, छोटून कय
सुणावा पण पाछो वेगो ही मोळी पढग्यो ।

ता पछ एक दिन री बात । मू , अघारी रात । भिरभिर मेह
 रसे । रात री एक बज्यारी-सी टेम । गळी मे कुत्ता लू-लू पड ।
 एणै काळ डाकी उणन खावणनै उणरै लार नासतो हुवै । अडा
 ता, घणो करनै हिडकिय कुत्तै न देख र भृस्या कर का कोई
 टळ-ओपरै आदमी न देखर मै आ ऊपर लो दो वाता मे सू एक
 त बिल जरूर हुवैली । मै म्हारै बडोडै डावडक कैयी-‘भाइया’
 आडो खोल र देख तो खरी रे । लट इया वयू कर भुस-भुस
 डै है ।

भाइयो उठियो अर आडो खोल र देखे तो एक आदमी
 गीजळी आळै खम्बे कन धोळी-धोळी भूखे वैद री खरळ हुवै जिसी
 एपी ओढघा अघवावा री कमीजियो पैरघा जगल जाय र
 प्रायोडे मिनस जिसी खुली लागरी धोतो पैरघा अर हाथा मे कई
 लियोडो सो ऊभो है । कुत्ता उणन देखर सागोडा कुपाळी
 खावै है ।”

भाइयै रो पण उण कनै एकलै जावणरी हिम्मत को पडी नी,
 जणा उण सारल पडोसी नै हलो पाड र जगायो अर एक-दो पाडोसी
 इस तक रो बोलाळो सुण र जाग्या अर बारै खडा आदम्या कनै
 आय ऊभा हुया । तुरत-फुरत मे गळी आळा सगळा जणा आळोच
 करघो क “खम्बे कनै जाय र देखयो जावै, श्री कुण है, कोई स्या-
 नियो मिनस है अथवा कोई चोग-चकार है अर इण कुवेळा अठे
 पण वयू आयो है ।”

- झंडी धार-विचार, गळी आळा हाथा मे सागोडा रेख लेय र
 खम्बे कन गया ।

कुत्ता भी गळी आळा री सै पा र और घणो भुसणो चालू
 राख्यो ।

आगे जाय र देख तो छोटलाल आपर कुडियोड मोडा न
बोद-सो पूर री पोटली मेल्या अर लावरया कन नू आपरी ज
वचावण खातर एक हाय मे आपरो सेटर अर बीज हाय
इ टोडी लिया ऊभो है ।

भाइयें दुर-दुर कर र कुत्ता नै हट कारया अर छा
पूछयो 'अरे बाबा थे ?'

छोटलाल बोल्यो 'हा, भाई ! ह ।'

भाइयो छोटलाल नै आपरै घरे लायो ।

मन छोटलाल रो इण तरे आधी ढळया घरे आवणो जाव
वेजोगतो लाग्या पण ह कई बोल्यो कोयनी । पण मे उण
पाछी की आ पूछी के "क्यू कर, व्याळू बीजी ?

छोटलाल दात तिडकावतो बोल्यो- 'व्याळू तो करसू
दिनूगे रो साव निरणो ह आतडा भागोज रैया है, है जिसा लाग
दो, भाळो-माळो करर सूय रसू ।

म पूछयो- 'आतडा क्यू भाग्या ढावें मे जीम लवणो ह
अर घरमशाला मे मचली लेयर सूय जावणो हो, उत्तरी दूर रा
रा गडक भुसावण न क्यू आयो ।' म्हारो बात सुण र छोटलाल
तो मून माघलो पण एक गैवी अवाज आई । आ आवाज के
कठे सू आई पण आई जरूर क- 'ढावाळो बाप थोड
हो, लागता हो जिको अडे वूडत अर बडायले निमघे आदर्म
न रोटया जोमावतो अर न माची आळो मासो लागतो हो, जिक
इण गोर्धे कने सू आपरो मचली तुडवातो । औ तो था गाव
आदर्म्या नै मोदा वणावतो फिर है । थान पण इणरो कदेन-न
कदे ठा लाग जासी ।' अर एक दिन एक मोटे सहरी एक
गळी मे मन इण रो प्रतख ठा लागयो के छोटलाल खाली गोगर्
गाय दीस ही है सीय इणर दीसत मे माथे पर पकायत कोयनी
पण किणी नै मारण खातर औ आपरै पेट मायला सीग तीख
अर नुकरदार वारे काढ सकै ।

तैल बानो

सुदरी आपरें घणो सावत री बाता सुणार कैयो—“थे खालो क बिलोवो होज करसो का कदेई उणरो टापरो पण आस्या [दिखाळमो ?”

‘ हालें किनी, वा तो बापडो सदा ही तनै साथे लेय र आवण र न्योरा करती न्यूता दिया कर ” सावत कैयो ।

तो आज ही चाला, थानें योरा करतो न्यूतो देवण आळीरें घरें । छुट्टी तो थारें आज है ही ज । थारी सिणगारो भी घरें ठावी लाघ जासी का कठेई कूदडका मारणनै सुदरी आप रो जीभनै दाता सू किचरती—सी बोली ।

सावन हयो—“वा ता बापडो घर सू बारें पग ही को मेल्लै नी, उणरें तो घर भलो अर का दफतर भलो ।” सावत बातु नै चालू राखत आप रो जोडायतन कैयो । “हालो तो भलाही, पण की डोळसर हुय’र तो हालो का ओही गिवारणी सो भेख-राखसो ।”

सुदरी बोली—“डोळडाळ रो मनै पतो कोयनी, धोती अर कोट’स मे सानपान पै’र लैमू बाकी,पदमणी वणन सू,रयी ।”

‘ तो पैर,पार वेगो सो” सावत ताकीद करतो बोल्यो—“इतर मे

म्हारलें चोळिये रें थोडी-सी उस्तरी रगड ल्यू जिक सू पाघरी हुय ज्यावें ।”

‘ठीक’—कंयर सुदरी आपरो साल मे साडी बीजो ‘गई परी अर सावत ताकड करतो चोलें माथे उस्तरी करण ठकग्यो । थोडी ताल मे दोनू जणा ओढ-पेर’र त्यार हुय अर सिणगारी रें घर कानी चाल वहीर हुया ।

“थप थप थप, कुवाडाने वजा’र” “सिणगारी व ओ सिणगारी बाई कु वाड खोल्या ।” भलें कडी खडखडा’र ‘सिणगारी बाई, ओ सिणगारी बाई ।” हला पाडियो ।

हेलो नी सुणन सू सुदरी आपर गाभा मे लाज-सी मन लागगो ।

सावत भल ओपरें आदमी दाई हेलो पाडियो जाणी कु करं ज वाडो खोलें ही ज ‘ओ सिणगारी बाई’, पण पाछो बीपड, त्तर नो आयो जाण’र भलें मघराई सू कुवाडा री कडी खडखडा अर सोचण लाग्यो क बात काई है ? इतरा हेला पाडलिया पण का सन गुमान नी । सावत सोचें—‘घर तो ओ ही है अर व कठई आय जाया पण नी कर । है तो घर मे ही नातर कु वाडा र तालो लग योडो हो तो ।”

सावत कु वाड नी खुलणें सू किणताव अर सुदरी वारें ऊर्भ साजा सी मरें । गली मे ऊभा-ऊभा अर हेल माथ हेलो मारता-मारता छेवट आखता हुय’र पाछो जावणरी वेई क इतर मे बर-साली मे पग बाजता सुणीज्या । पग बाजता सुण’र व दोनू हा जठें ही ऊभा रया । अर मन मे राजी हुया क छेवट अठ ताई आवण

। वेगार अँळी तो को गईनी ।”

वारणो खुल्यो ।

साद सुणोज्या - “अरे, भाईसा आपे ।”

सावत साद सुणा'र घकं देख्यो तो साम एक लुगाई ऊभी है ।

जिकी जाबक डोकरी दाई, रग री काळीकुट । आख्या मायने गुडि-

योडी, अर काळी कळूस छायोडी, मूडै मे हाड रो के लाड,

जाबक बोखी । चामडी सळा पडियोडी, माथे रा केश धोळाघप

नाण मीणियो ऊ चाम राख्यो हुवै । जाबक कोम्ही -सी लुगाई

जकी एक बोदी सी धोती डील माथ पळट राखी है । इण लुगाई

ने देखकर सावत रे की समझ मे कोनी वैठी कै आ कुण हुप

पके । जद सावत समे जणावतो पूछ्यो - “क्यू ओ मकान सिण-

गारी वाई आळो कोयनी ?”

‘कानी क्यू, पण इया जाणता-वूभता कू कर करो हो ।”

वारणो ने सबडक खोलतो उण लुगाई कयो ।

इण लुगाई आदरमान करती कयो - “आवो आवो मायने

आवो आज कठीने सूरज उगग्या कै भोजाईने साथे लेयर पधारिया

हो ।” वा आगे बोली - “वारै ही ऊभा रैसो काई”, मायने पधारो,

इतरा कैयर वा सुदरी रो हाथ भालर कोडायती घर रै मायो

लेगी पण सावत दोगड चिती मे वारै ही खडा रियो । पण छवट

सावत मायन आयर वैठक मे जठं सुदरी वैठी ही वा भी बठग्यो ।

सावत सुदरी कानी अर सुदरी सावत कानी ज्योयो ।

सावत ने सुदरी कने बैठक मे वैठयो देख र सिणगारी नाव

आळो वा डोकरी जिकी कृवाड खोल्या हा आगणे मे मू बोल'र

कैयो—“भाईसा भीजाई सू वाता करो इतरें मे मे था ? सारु चाय वणा'र लाऊ ।”

उणरी “चाय लाऊ' वात सुणा'र सावत सुदरीन कया
“तू मायनें जायर उणनें बोल दे कं चाय तो म्हे सिणगारी बाई र
आया नू हीज पीवाता ।”

सुदरी शकती-2 मायन गई अर सामली साळ मे वडघोडी
उण लुगाईन कयो-’ नै करै हे कं चाय तो म्हे सिणगारी बाई र
आया हीज पीवाला सा आप चाय चडावण री ह्यैण मेछळ नाग
करघा ।”

इण वान मायें उण सुदरी नै पाछो कया कं— “चाय वणता
जितरें मे यारी सिणगारी पण आय जासी ।”

सुदरी पाछो वंठन म आयर बठगी ।

मावन समे वाटण सारु वायद ही वान चलार्ई क “मात्रनात
चाय रो परमो सगळें ही पासग्या है । जठ भो जायो अर चाये
बाई किल्ली रं आया, चाय तो त्यार है ।”

“त्रमातो है' कयर सुदरी मावन री यात गारी ।

सुदरी गागत पूदना-’ ये तो मय्या हा क सिणगारी
बाद तयनी हीज रेव अदाग भा तुगाई कुण है ?”

मावत आया-’ गई बाई मू पद जद यात हृई जगा बाद
या ही यथाया म क, एडभो यद एर ही हीज मागता पावनी ।
गगर बोई है ।’

सुदरी-’ गटं बोनी,—’ घर दे आ भी वना कय्या हा क बाई
कड ही जद घादे कान गे से, व रे एत्र कड गपारनी ।’

सावत कयो— 'अबक पाच दिना री छुट्टी पडण सू कठैई गई परो हुवला अर इणनै पण कठै ही सू बुलायली हुवला, मिनखा शरीर है कदे बदास काम पण पड ही जावै ।”

सु दरी बोली— “हां, आ तो बान साची है । मिनख शरीर है, कदेई कोई काम धन्धो भी हुहि ज्याया करै ? ”

इया लोण लुगाई पडी सुरता मे बतळावै हा । इतरै मे सु दरी बोली— “डेणी चाय बणावण मे ताळ घणो लगाईनी ।”

“थारो नमो उतरग्यो दीसै ।” सावत बात पीबतो बोल्यो ।

‘नसो तो काई उतरग्यो पण ताळ छणो लगावै जठै की खावण-पीवण रा सराजाम ।” सु दरी मन सू अटकळ लगावतो कयो ।

“ता तू काई जाणै है इण वेळा चाय कोई लूखी थोडी हीज पावली ?” सावत आप री आ बात पूरो पण नी कर सक्यो हो कें जितरै मे सिणगारी वाई चाय आळी ट्रे लिया बंठक मे पग रारयो । इया अचाचूक री सिणकारी वाईन आई देख’र सावत अचक वचवाईजग्यो, दो वाई ने देख’र बोल्यो —

“वाई थां ओ काई विगो, आज थे बठ गया परा हा ? थे घर मे कठाकर आया, घरो भोडै मायकर ता थे पकायत ही नो आया, म्हे सामै ही तो बठा हा ।” सावत भळै आग बोल्यो— ‘म्ह तो याने उडोवता उडावता आसता हुयग्या पण बापडी थारै आ कुण आयोडी है, म्हारो तो घणो ही ध्यान रारयो आपार साथै चाय पीवण साह उपन पण बुनावातो सरो । म्हार आ तो थारै

बिना ओदरगी, मनै सैलग ओळवा दे दे अखता लियो कं इतर
 दिना सू तो कठ आया पार पडया तापाछे ये मिल्या नी, हा ठ
 आ डोकरी थारी वैन है काई, थारी अर इण री बोली ए
 जिसी है।”

सिणगारी वाई बोली “बोरा, नी तो अठे कोई डोकरी है अर
 न मे कठई गई, म्हाग् घर मे तो डोकरी गिणों भावै नोसलो, म
 एक हीज हूँ पण वीरा ये आथर नै ओळखो हो खुद मिनख न नी
 पण आज मिनख री नी आथर री ओळखाण है।”

गायब्यां रो मेळ

नागौर परगन रें आयूणें गावा री बात है। उठें लोग प्राप आपरें खेता मे पक्की ढाण्या घाघ'र बसै। आ ढाण्या मे घाम करने सियाळ री राता मे, लोग बडै ही कोड सू 'सगत' करवावें। चोखळेंर गायब्यान बुलावें अर तदूररें उपरा निर-गुण रा सबद अर अणभें री वाण्या गवावें।

केहडली गाव मे किसनाराम री ढाणी, किसनाराम रो सगत रो तेवडणो।

म्हारी चरणोटी रा पण व हीज गाव। में भी वा गावां सू रामतोराम उठीनै जाय नीसरयो। म्हारा आसण कालडी री वाडी मे हो। कालडी और केहडली मे फकत तीन कोस रो आतरो।

किसनाराम न म्हारी ठा लागी कें में आयूणी ढाण्या मे रमतो-रमता अब कालडी आयोडो हू। वो म्हार कन आयो अर लुळताई सू हाथ जोड'र पगा लाग्यो। में अतस सू आसीस दीवि अर उणरी सुख साता पूछी। किसनाराम बत्तीसी मायकर हेत छाणतो बोल्यो—“आपरी मरवानगी सू घणो पण खुसी हू।”

किसनाराम घणी वीणती करतो मनै सगत मे आवण रो सदेसो दियो अर ऊपर सू घणे मान थको भळ आवणरो कयो

किसनाराम म्हारो आघमान करतं कयो कै—“जे थे नी आवा ति
तो म्हार डाढो विचार हुवला ।”

मैं पाछो कैयो—“पकायत आऊला, भला । थारं कया प
नी आऊ आ कदे हुवै ?”

किसनाराम म्हारो अकीदो मान'र बाग-बाग राजी हुन
पाछो परो गयो ।

मैं पण म्हारें चेला-चाटघानें माथें नेयर किसनाराम रें
ढाणी सागी अंड माथ पूगयो ।

किसनाराम रें म्हार आवणरी मेह री ज्यू उडीकना लाग रयी
हो । वो मन आयो देख'र हरयो हुयग्यो ।

उण कैयो—“छेनं आछां करियो महाराज । आप पधारया ।
म्हार माथ मोटी किरपा करी । आपरें आवण सू म्हारी घणा
सोभा वधसो ।”

म मोठास सू पाछो उयलो दियो—“थारी सोभा हुया म्हारी
घणो जीसोरो हुवै ।”

गढ साळ रो वारलो मोटो भू पो जिणमे पच्चास मिनख सोरा-
सोरा मा ज्यावं इतरो वलो । मनं कित्तसाराम इणो भपटं मे एक
पन्ववाडें बाजोटर माथें तेवडो वामळ विछा'र वैठाय दियो ।

सगत मे आसला पासला गावा सू आयोडा मिनख तीसक
रें अडगट ।

गायत्री चौखळें रा बाजोदा । सानरा साज बाज लियाडा ।
गायव्यारी न्यारी-यारी जूट । पें'लो जूट म मुदामुली ह्म

स कामड, हेमदाम छोरलो सो, पञ्चीन-नीस वरसारो मोटियार
 जो जचतो सो । सागीआळ जेतन, कीई चाळीसेक वरसा रं
 गै वग ।

दूनी जू ट रो मेढी जेठादासजी र धोरै रो गोयददास, हेमदास
 जोड नोडै । साग सावतो अर गरणो रो ठाणी रा ऊदानायजी
 सघ । ऊदानायजीने तो धोरै मू आवतो वेळा गोयददास अर
 आवत साग ले लिया हा, बाकी धोरै सू तो अ ही दो जणा वुवा हा
 तीजाड गायव्या री मडळी लाधूदासजी री । लाधूदासजी
 मालडी र रामदेवजी रै मिदर रा टिकायत पिडत । ऊमर मे दूजा
 करता कई पाका । गाभ-लतै सू सागीडा सज्या वज्या, डील मे
 डीगा पण चैर सू साव गरीबिया ।

छुटकर गायव्या मे जाखाणियै रा प्हाडसिध, भू डल रा
 देवादास, खुद केहडली रा सुरजोजी सुथार अर चित्ताने रा वसी
 महाराज ! अँ मगळा इसा गायवी क इणारै तोल मे दूज गायव्या
 रो मोल विक जाव । अँ से एक सू एक आगळा अर एक वीजै सू
 सिरायत ।

सगळा हीज जू ट आळ गायव्या कन आजरी चलगत रा
 नू वा-पुराणा समचा साज-बाज अर वै सगळा गाभे घोरडै सू टाटियै
 भात वण्या ठण्या । ओपता अर देगा-दिस्टी मे घणा फूठरा लागता
 केई जणा ता आप रै गळै मे माटोडै वोरियै तुल मू गै रा कठा
 घाल राय्या एक जणे काळी मिच सतूल मिणिया री रुद्राक्ष री
 माळा पैर राखी ही ।

सियाळ री रात हुवणे सू सैग जणा प'सी कामळा ओढयाडा

भूपै रै पाल रै सारै जम्बोडा बैठा हा । भूपै मे दीये रा उज
 हो । सगत मे ज्यू-ज्यू दूजा मिनख आवता गया, वै सगळा हा
 भीड साकड मे बैठता गया । कंबत मे के'यो है के "सैण तो सक
 ही भला ।"

नागौर रै आथूणै गावा रो ओ सुम्ब के अठ र मिनखा
 चिलम तम्बाखू रो चरसो जावक कमतो । अठै रा बिशनोई, सि
 रामस्नेही अर जसनथी जाट तमाखू न बस पडता साकडै हीज
 आवण दैवै । कामड बीजा भी अँडी रळी मिळी सगत मे होवै
 बीजो नैडो नी आवण दय किणीन पीवणो हुवै तो ओळातरै जाव
 पीवै ।

भूपड मे सँगायबी आप-आप रै ढव साह बठग्या । सभा
 राणोराण भेळी हुयोडो । लोगा मे 'अव गायबो पोळावै अब
 गायबो पोळावै' रो गोरबो चालू । इतरै मे एक बडेर मिनख क्या
 मळै किण री उडीकना है, रात आधी आवण नै लागी है रे ।
 अबे क्यू मोडो करो हो ? पुळावो रे भाई गायबो ।'

बडेरै मिनखरी आ वात सुणी के गायब्या रा कान खडा
 हुवा । अबे तो आपोपरी मे गावण साह गिगरत करणन लागी ।
 वो केवै पला ये गावो । अरे केवै पैला थे उधेरो । इतरै मे एक
 जण बोच मे बोलत थके कयो- "लाधुदासजी सगळा मे बडरा है
 पैली अँ हीज उधेर सी ।"

आ वान सुणैर लाधदासजी बोल्या-ना-सा, म्हारी अठ क
 चिकारी है । ओडी के ओकात है जिहा हू पैली गाळ ? व आगे
 बोल्या - 'हाथी तुलै जठै गधा काण मे जाव ।' इया केवैर आप-

री लुब्धताई दरसाई ।

लाघूदासजी री भाँवात 'मुण'र हेमदास रो सागीवाळ चेतन वमक्यो अर बड बोल, मे पाछो बोल्यो- "आ कदेई पै'ल करी के ?

चेतन रो बात सुण'र जेठादासजी रँ घोरँ रो गोयददास बेचाळ ही दगड नाखतो बोल्यो- 'आ पै'ल' नी करी तो थे कर देवो । थारी 'तो गढ लका तोडघोडी हे, जीत'र ।" ।

गोयददास रो ओ मैणो सुण्यो के हेमदास अर चेतन रँ चरडको सो लाग्यो, जाणें तेल रो तडको दियो है ।

गायव्या मे इण तरें आपोपरी मे 'जद'सबदा री बटाबट बाजती लागी तो जासाणिये रा प्हाडसिध बातने रस्तैसर साबट ता बोल्यो- "थे रीस नी करो तो मैं मनाऊ गणेश सू ड सूडाळने "अबकं ठीक रँसी गावो । कयने सगळा ही प्हाडसिध री कयो बात री लड भारी ।

प्हाडसिध- "सू ड सू डाळा दूनदूनाळा" गाय'र डव्या ।

प्हाडसिध रँ डवता ही हेमदास री जूट मे मजीरा री भिरणकार उडरणे लागी अर तन्दूरें रँ कम्पे तारा माथे अणभेरी निरभे वाणी गाईरणे लागो । हेमदास आप रो सबद पूरो करतो डव्यो ।

हेमदास र डवता ही लाघूदासजी अडक चूट आळी अडवी खडी करे, जिसी वाणी गाई । वाणी रा बोल इण तक हा-

माटो घडने लगी कुँभार ने खातीने छोल रँयी लकडो

सूई तो दरजी ने सीवे

भोजन वैठ चूलेने जीमे

दूध दहो से घीमे निरते

सोनो घडै सुनारनै विल्लो न मूसा पकडी
खाती नै छोल रैयो लकडी

आघा देखै बहरा सुणै
पार्गाळिया परवत नै तोलै
इण रा अरथ विरला खोलै
खायगी नार भरतारनै आ उलटा वेद री भकडी

खाती नै छोल रैयो लकडी
घरती वरसै अम्बर भीजै
कटै कुहाड दरखत सै सीज
बीज पकड हाळीनै बीजै
लोहो घडै लुहारनै जाळानै पूर रैयो मकडी
खाती नै छोल रैयो लकडी

बकरघा रै सिंघा रा खाणा
मछली खा पकडघा मरदाणा
सुखीराम रा भेद नही जाण्या

२ । चूडी घडै मणियारन बाण्यानै तोल रैयो तकडी
खाती न छोल रैयो लकडी

लाधूदासेजी रै आ बाणी गायेर ढबता ढबता हेमदास
तदूर रै सागी सुर मे आप रा सुरे रळावत सेजोड बाणी गावणी
सुरु करी—

इक लू का पकडयो सेरनै बंठी हँ कान पकड कै
सब जीवां न मार लू कडी
खासा भोटी हुयगी मोगडी
पकडी बा सेर री धोवडी

मारण लागी सेर नै छोडघा है पिंजर जडकै

--- इक लू का पकडया सेर नै

गादडमिघ ले आयो टोळी

सुसियो कं म्हे फौजा बोळी

लू का कं मचादचो रोळी

लूट नेवो ससारनं कुण जीते म्हासू लडकै

• "इक लू का

घग्घू कोचरी सेही खाजा

तोतर बुटबड चुगला राजा

वेइयो क'वै हू सव रो राजा

आट मकै नी वारनं सै' भागं म्हासू डरक

• इक लू का

देई देवता डर कं भाग

भाज गयो विरभाजो भागं

जम देवता सूत्यो जाग

कै'वै शकर छद बणाय कै इ दर भी सुण के घडकै

• "इक लू का " ---

लाधूदासजी अर हेमदास री गायोडी अँडी-अँडी वाण्या सुणी जद गोयददास रै जी'मे घ्याई-फाई लागगी । गोयददास ऊदानायजी साम आप रो मूडो फोर'र कान-बात्तो करी क' 'अवै तो ऊदानायजी, कोई अँडो घडबो थालो अर अँडीखम सबद गावो नी तो भरी सभा मे मानखो जासो स्यानमिस्ट होसी, आपा रै धोरै रो नाक फटसी ।'

ऊदानायजी छटयोडी रकम अर फँरोज्योडा घोडा वै

आटी लगावें तो अडी लगाव वें वाढ्या ही नोसरें नी ।
 वें अडवो अडावें जणा मोटे-मोटे रावणया रा मुहाणा फार
 नाखें वयू के व पूरा तरक वाज । वात मायें वात अडी अडाव
 जाणें मूळ में हळ अडियो हुव ।

वें गोयददासने केंयो- "तू इतरी काई कात्रे लाव है ?
 में आ गायब्या रो जोभ, हाथ, दाय कूडा-र छोडूला, तू तन्दुरो
 साम हू गीरू ।"

गोयददास तन्दुरें रा तार मागीडा कस लिया अर खूटिया
 ठरका-र थिर करली । अर उदानाथजी-हलखारो करियो अर
 मूडें माय मुळकावण पसारता गायवो सुरें कियो-

अवधू, बडका बीज बिस्तारा, कोई जाणें, जाणन् हारा
 आपो आप और नही बीजो आपो आप पसारा
 भाई भया भतीजा मेरे, बाप भया घर वाळा
 दादा है घर पोता मेर सुसरा है घर साळा -
 भार्या है पुत्री घर मेर सासु भाई लुगाई ।
 भोजाई भतीजी मेरे साडू-साळी जाई
 नाना है घर मामा मेरे, नानी मेरी माई

मामो, मेरा मामा जाया, माता, रें घर बाई

बेटो मेरी जाई जाया, भूवा जाई दादो
 काकी मेरी काको जायो आ गत अददी अनादी
 में ही मात तात सुत आता में ही मेरा गोती
 पुत्र वधु घर इमडी जामी हुय गई मेरी पोती
 में जग माही जगत मुझ माही मे जात सू न्यारा
 आपो आप मे वठा दीस आप उपावण हारा

वट में बीज बीज है वट में इसडा वट बहु भीणा
कहत, लानगर सुण रे पूता उपज हुवा तव लीणा

ऊदानाथजी बाणी गाय'र थम्या क, साभळू उणन

वा' वाही' दीनी अर कँयो 'ध्याधिन है धारं मात-पितानं
- आछी ज्ञान गोथळी खोली है, थे । पण इण ज्ञान
गोथळीनं जाणं जाणन आळा ही ।'

ऊदानाथजी हा भाई, अँडं ज्ञानने गावां तो आपा सगळा
ही हा ? पण जाणं इणन कितरा लोग है, इणने जाणसी कोई
सुगरा श्चियां रा ही ज ।" आ कँयने ऊदानाथजी आपूरी
गभीरता दरसाई ।

ऊदानाथजी रो गायवो अर गलरस अँडो मीठो मधरो
अर सोवणो-मोवणो हो, जिणकर सभा में रग जमावणो उण
रे एक सहज बात ही ।

ऊदानाथजी ज्ञान में दो पग आगळा मेलता बोल्यो-"वाणी
गावा तो आपा सगला ही हा, । पण अरथावणो कितराक
करै है ? अँडो वाण्या विना अरथाया की पल्ल पडै नी ।"

ऊदानाथजी भळं आगे बोलता कँयो-"आ भाई हेमदास
हैणं गायो कँ लू कडी सिघ रो कान पकड लियो अर आ लू कडी
सगली जियो-जूनने । खायगी । इणरो फोज कुण ! गादडो अर
सुसियो पण इणं रो अरथे काई ? वयू, हेमदास, अरथायसो
गाई जिकी पाणी । कँयर ऊदानाथजी सभा माथे आपरी निजर
नाखी ।

हेमदास ऊदानाथरी बात रो पडूत्तर करतो बोल्यो-
"पे'ला लाधुदासजी हीज वाणी अरथाय सी, कारण के लाध-

दास जी टिकायत हूँ अर आ हीज अंडो गायबो पैला मुह
करघो । जद पण पला अ-हीज अरथायसी वाणी ।”

लाधूदासजी ढोळी रा भोळा पण सगत माय बठियोडा ।

लाधूदासजी कंयो —“मैं तो जद अरथावतो जद हेमदास
म्हारी वाणी मायें तोड आळी वाणी नी गावतो तो ।

लाधूदामजी री बात मायें हेमदासनं बोलण नं जागा
नाधगी ।

हेमदास कई भिचकतो सो बोल्यो—“जणा तो ऊदानायजी
ही वाणी अरथाव सी, म्हारी वाणी मायें आ तोड आळी वाणी
गाई है ।’

हूस, ऊदानायजी मुळकता सा बोल्यो—

ऊदानायजी भळ आगे टुणकलो नाखता बोल्यो -‘ ओ चेतन
कं'वे होनी, लाधूदासजीनें क आ कदेई पं'ल करी के ।

चेतन ऊदानायजी रो ओ टूणकलो सुणता पाण चुपचाप
जाड । बोचग्यो । चेतन रं चेतन मे चेतो हुवें तो बोलें । ।

सभा आपोपरी रं सबदा री लडाईं मे बोलीवाली बठी
ग्यो । जाणें चिडकल्या मे भाटो नाट्यो हुवें । --

मभान बोली बोली देख'र ऊदानायजी बोल्यो “अरे
सगळा ही सास कूबर सारग्या ? अरथाबोरे भाई ! गाव
जिकन अरथावणो ही चाहीज । अरथावें जणा तो 'गाये रो
कई रस पण आवें अर अं जिवा मिनव इतरी भू चाल'र
आया है, आनें भी कई भोम वधें । नी सवा देखल्यो थे ।”

ऊदानायजी आगे मळ आप री बातनें खाचता बोल्यो—
' घणा दिना री बात कोनी काल री हीज बात है ”रतिराम

सिराणरी ढाणो मे बाण्या गाई, एक सू एक बंधतो। अर
 आगा आळी जिसे बाण्या तो अरथावता मोटे-मोटे जान्या रो
 आह्या दुखण नै लाग जावै। बाणो किसी'क। जिके री के पूछो
 हा ?”

एक जण विचाळ ही बोल'र कंयो-“कैया जाणीज ?”

ऊदानाथजी वा बाण्या री सद करावता बोल्या-“वा बाण्या
 री सिरे मोळी हो

1 कोडी चाली सासरै, नौ मण काजळ सार

2 सूसियो आळ सिधा सू खलै

3 पढियोडा पिडता करोनी विचारा, पै'ली पुरुष हुया क'
 नारी एलो।

4 बारा वरस सू बाभु ब्याई पुतर लाई पागळा

5 विरछ एक ऊग्यो भोमी पर नही पान नही डाळए
 नही पात नही छायाए

6 नदी के किनारै अबधू घूसली जुऊगी पेड मछलिया छायो
 एलो।

अडी सी और पण कितरी ही बाण्या गाईजी। पण आ
 बाण्या रो अरथ रतीराम अरथायो जठे रतीराम नी नावडियो
 उठ मे पण सायरो लगायो।

ऊदानाथजी री बात सुण र प्हाडसिंघ बोल्या- 'बात तो
 साव साची फरमाई आप पण महाराज, अठे तो था सू बती
 कुण है जिको अडी बाण्या रो अरथावणी करै ?

'नी भई अ गायबी है, मैं तो खाली महाराजनै अठे
 आया सुण'र साबत रै साथे बुबो आयो।' ऊदानाथजी बात री

स'ळी सारता वोल्या ।

'तो महाराज नै अरज करा के अथ करण सारु ।' एक जर् कय्यो ।

ऊदानायजी बोल्या—“महाराजने क अरज करा महाराज तो ज्ञान रा समदर है। अठे तो आपारो वात चाल'रैयी है” ऊदानायजी सरधा जतावता कय्यो ।

सभा मे सू एक जणो वोल्यो- 'का तो भाई कई कं'वा नातु आ कं वो कं ओ कामे म्हारै डव रो कोयनी ।'

अब तो सभा मे सू कई जणा सांगे ही बोलता कय्यो- 'अर यावो वाणी हेमदास ।'

पण हेमदास तो जाणै हेम हुयग्यो हो । वो कई ताळ वाल्य कोयनी ।

ऊदानायजी नै अ'डो ढग देख'र भु भळ आयगी । वे आपर गोडा नीच दियोडो टोटक मरखावता वोल्या- 'अ भाई ज्ञानो है जद अ ज्ञानरो गहरी गम मे जाबक गुडग्या नी, हेमदास बोलतो तो खरी' ?

हेमदास अब कई आप रा माथो-ऊचावतो वोल्यो-“महाराज (ऊदानायजी) में तो साची कंऊ म्है तो खाली गावणो हीज जाणा अरथावणो म्हार तावै रो । काम नी ।'

। - सभा मे सू एक जणो कई मीठास सारतो, बोल्यो- 'महाराज ऊदानायजी हेमदास थार आंगे कोडी'क चीज, जको था थका वाणी अरथावण री हिम्मत वाधे' ?

ठोक है पण, वात नी डवतो आवणी चाहीज ।'

ऊदानायजी कय्यो ।

मळ एक डाकरै बोलर कैयो-“ऊदानाथजी थारै आग सगळा
 हाथ पसार दिया है, सोवा लग-सा हुयग्या है। अवं तो
 ही समझावो।”

ऊदानाथजी गहराई रँ भाव मे बोल्या-“हा, भाई, अवं
 पूनी अरथावा, तो ल्यो सुणो-

लू कडी नाव माया रो है सिंघ जीवात्मारो नाव है, मा या
 वधैर जीव भर अर जलमें। ओ हो जगतनँ खावणो है।
 मनख रो ओ नानपणो गादडो अर सूसियो है जडपणो (अज्ञान)
 र सासो ही घघू अर कोचरी जाणो, वंड्यो ही अभिमान है।
 जठे अ रँव उठे देवी-देवता रो के काम ? वँ तो उठे सू भाजसी,
 असो हीज।”

ऊदानाथजी रो ओ छछम अरथ मुणैर एक जणै लाधूदास
 रो गाई जिकी वाणी रो अरथ पूछ्यो-

ऊदानाथजी लाधूदासजी गाई जिकी वाणी रो ओ अरथ करयो-
 ‘माटी सू हीज सगळा रँ शरीरा रो रचना हुवं अर लकडी अन-
 णळ मे सगळा रँ शरीरनँ बाळैर पूरो करे। ओ हीज छोलणो है।

समें रो सूई जगत रूपी दरजी नै सोवँ अर शरीर रूपी चूल्हे
 रँ काळरूपी भोजन जीमें। तत्व रँ मा हीज आछी चीज है। सोनै
 तरीसा सदगुण हुवं जणा सुनार रूपी शरीर रो घडीजणो है।
 जिका मिनख आप रो बार भटकती विरत्यानै ससार कानी सू
 ह्तावँ, अ तर रो आत्मानँ देखे अर जोग ममधी मे अणहद सबद
 सुणै। भील मिरजाद (निर अभिमानी) सू न्यारो रँवँ उणनँ
 होज पागळो जाणो-जिकँ मायानँ कडखँ कर नाखो है आपरँ
 तन-मन सू अर आत्मरँ भाव मे रँवँ वो हीज पागळो है।

जिको अभिमान रै परवत न तोल । माया ही नार है, आ ही
 आपरै जगत रूपी पति नै खाय रैयी है ।”

सभा ऊदानाथजी रो अँडो समझ मे आवण आळो अ
 सुण'र घणी पण राजी हुई अर ऊदानाथजी रो घणो आधम
 करघो ।

सभा मायला मे सू एक जणो बोल्यो थान आगे की पूछ
 हुवे तो पाट माय वठियोडा महाराज नै पूछ लिरावो । मे बान
 आयो मौको क्यू खोवतो हो, में कैयो मनै पैलाथको ज्ञान हो
 ऊदानाथजी रो अरथावणी समचै वीचो कुण पण ? अँ प्हाडसिध
 पण अरथ अछोतो दुकोवे है । आ बाण्यानै नाडी बोनी मे उठ
 वाणी कैव पण शास्त्री रो बोली मे आ हीज विषय बान
 कुहावे । कबीर, गोरख, आसाभारती, हरीराम बनानाथजी अ
 आज रै जुग रा लाघूनाथ अर विवेकनाथजी जडा योगी आ
 वेदांत सू मेळ आवण आळो अरथ बैठेव । घूडाराम, रुडाराम
 बिहारी दास अर नवल रामजी जिसा ज्ञानी सता अँडो बाण्य
 मायकर उपनिषदा रो ज्ञान पावू दुनिया सारु आ बाण्या मायक
 प्रगट करै ।

इस तक सभानै राजी देख'र ऊदानाथजी हसता मुळकत
 सा गोयददास कानी मू डा फोर'र सेन करो कै ' किसी क रैयी ?'

गोयददास राजी हुयोडो पाछी सेन री भापा मे हीज कय
 "झाड खोपरा सी ।" अर मिसरी माखणा सी ।

संपादक

केई दिना ताई घणो अर चौतरफो सोच-बिचार कर'र एक जण अखबार काढणो पोलायो । सपादक आप री जाणमे अ'ही स्थानप सू छापो काढणो चालू करघो क मत पूछो । छापे सारु सपादक रै जी' मे कोड घणो, हिये मे उभाव घणो ।

छाप रो ऊपरलो- 'मुख पानो' कोई देख तो देखतो ही रैय जाव । मनोराम छापेने देख'र ललचावणने लाग ज्यावै जिया भंस न देख'र पाडियो डीडावणने लाग ज्यावै अर टोगडियो गाय नै देख'र हुरकणने लाग ज्याव । छापे रै ऊपरले पाने माथे फूठरा चित्राम, रग-बिरगी लिकोदया, नैन सुखाळी छिव्या, सै चडूड आरु (आखर) अर मायले पासै रुकाटा खडी करणळी खबरा । छापे रो पेलडो पानो इसै-विये चितेरं कलम सू थोडो ही चित्राकीज्यो हो । ओ पानो तो सपादक खुदाखुद हाजर रैय'र नगर र नामो कळाकार सू हाथोहाथ रोकडी दाम देय'र चित्राकोयो हो ।

सपादक अखवार काढणे मे अर आप री नाववरी खातर मरघो जीव । सपादक आखो दिन आप री नाड, हेठी नाख्या लिखा-पढी में लाग्यो रै'वे । कई कूडी अर कई साची खबरा छाप्या सपादक रो जी' मोखातर पावे । इण रो जणा जावतो जी सोरो हुवे । सपादक राजनीति मे पण अ'हो नासै, जाणे अवे

अठ्ठूइयो नै घडी माय अलूभर पडघो ।

सपादक आप रै चरै मोरै सू खासा फूठरो, डील सू क
सूल सूल नी थाक्योडो तो नी घणो माता ।

सपादकनै उपरली हसी हसण री खासा रवद । लुब्धता
मे हाथ जुडता ही वत्तीसी खुल ।

सपादक री आस्था री जोत इतगी घणी तेज कै उण
आगली पाछली अर एक री दो सूभ तो ही पण उण दाम मा
मडा'र चश्मो लियो है । लिखा-पटी घणी चश्मो उतारया ही
सुनसर हुव पण जोर के, करै विना चश्मै र लोगा माथ प्रभा
की कम पडे । वो घडी-घडी चश्मो उतारै मर घडी-घडी पाई
लगावै । सपादक किणी सू बात करता थको चश्मै न हमाल म
पूछतो रै'व ।

जिकै दिन छापो प्रेस सू बारै, नीमर उण दिन ओ ए
आदमीन आपर साथै तिया-लिया इतरो उतावळो-उतावळ
चाल'र चटकै सी थारै-म्हारै हाथा मे छापो पुगाव दिरावै जा
मोफडदान मे होज लका लुटावतो हुवे । अर जिके दिन सपादक
छापे रो अ क लोगानै देवणन जाव उण वेळा ओ आपनै सगळा सू
मातबर अर लू ठो सम्भ । ओ आपर मन मे जाण कै सहर रै सं
लोगा माथ म्हारो प्रभाव पड रैयो है । ठीकरी रै लाल ग्ग ज्यू
जिको नी घोयो ऊतर अर नी माज्या मिट ।

स्याणा आदमी मिनस रो थो'मो' लगा लिया कर क आ
आज पोमाईज्योडो है । सागीडो मोदाईज्योडो । पण आ बात उण
रै मू डे मार्य कय'र कुण सारा तु'या तोड इण रै मू ड आगै स
मनरखी अर मोठी बडाईज करै ।

लोग बड़ाई बरता क'वै - "घाटा गुणी हो थे, देश विदेश री समूधी खबरा छाप नाखी थे तो । धान समच कू कर ठा लागै है, आ बात्ता रो ।

कोई चीर बैताळ मेयाडा है काई धारो !
 आगै रै जमान मे सेरडा चलगी सू अळगी अर आवण आळै बगत री बात रो पतो लगा लेवता ॥'

सपादक लोगा री छदेमद रो अडो मोठी वाता सुण'र घणो पण राजो हुवतो ।

सपादक बिद्या मन सू साव भोळो हो पण आपनै वो गजब रा गोळो समझतो ।

सपादक मोटोडा आदम्या सू घणी पण सेदमेद राखतो पण गरीब-गुर्बै माथे मीट ही नी नाखतो । जद के सपादक वण्या सू प'ला ओ हमेशा ही गरीबा री हिमायत करतो हो । वो उण राज तेज आळा सू मोकळी घालमेल राखणी सुर करदी ही । हेठलै सिपाही सरडानै तो वो साव गिनारतो हीज नी । वानै जू जितरा ही समझतो नी ।

जे कोई सपादक री गिगरथ करतो तो वो काना मे तेलघाळर वेठे ज्यू बँठ जावतो । किणी री बात माथे धान नी देवतो हो पण मन मे अँहा रो नाव लिख'र राखतो अर कैतो बख मे आयै ठा घाल सू 'ऊपरलै मन सू क'तो 'आज री दुनिया है कोई आछो बतावै कोई माहो' ।

सपादकनै नै'चो हो के लाभ आळी सुणानी अर बै लाभ आळी नै कोरा कारा जाण'र छोड देवणी । बिना भोगै पडती काना ही

वयू ढोळणी ।

सपादक पण छापो काड्या राग्यो । कागद अर छपाई रा पडसा लागता गया । सपादक सोचतो जिवे दिन छापे रो चढो भेळो करणने ढूळू ला, उण दिन लोगा सू मिट दो मे काना बिचाळे कावरो देय'र दाम लेयनू ला, मन कुण नटेलो ? किवरा भोगना किस्त खाया है के मन नटेलो ।" यो आपरे मन मे इस तक मनचूरिया लाडू फोडतो । वो सोचतो के जद चदे री रसीदा कटणो सुरु हुवेला, तापाछ नाणे री ताई टाण नी रवे'ला । अरडाट करतो घन आ पडेलो ।"

लोग जाणता के सपादक ओ छापो खाली उपकार री भावनाने लेय'र काडे । आ कुण जाणे के एक दिन वो छाप रा पडमा भाग वेठेला ।

सपादक आपरे मन सू गाव रे आख लोगाने गायक बणा नाह्या है । छापो तो सगळा ही पडे, लोग छापो पढता जावे अर उण री सरावना करता जावे । के क व 'सपादक परउपकारी जीव है ' लोग के के 'जिको आप रो विगाड अर जगतने सुधार उण र जस री जहा पत्ताळ मे गुडे ।"

इण तुमार सपादक आपरे छापरा मोकळा ही अक नीसार चुकयो ही । पण छाप रे सपादन मे अर घर मे ऊजळो खरच लाग्यो, बाजार री मोकळी रकम माथे हुयगी । लोगार कूडिये-गैल खरच बघतो ही गयो । लोगा रो काई, लोग तो 'लूखा-लाड खम्मा घणी करता रैयग्या । जणो-जणो पडसा मागणने पण पल्ले पडसो एक 'पण पढयोनी' खाली उण गाव री कु वराणी गाव । अवे तो सपादक रे घणी मुसकल हुयगी । जठी कर

नीसर लोग गाभा फाडै, जणो जणो 'दचो-दचो' करर खालडी खावै । मागतोडा खत्ला खोल'र लार पडग्या । एक बोजै नै ओ पतो हुयग्यो क सपादक रै वो 'उतरा माग वो जितरा माग ।' मागताडा सोच ले पडसी जिको जीत मे रै'सो, नीतर इण फकीरमल सपादक कने मरयोडी माग्नी ही देवएनै कोनी । प'ली तो 'हम चौडा गळी साकडी' करतो बापरो सो माल बजार सू तुनालियो । लोगानै प'ली जणायो क सपादक परळी खुदा हुव, उण र पाईमा टक्का री के कमी । राजतेज आळा रै साथै ऊठणो-बैठणो पण अब कठै गया व नीजु ? चुकावनी सपादक री बळी ? नीतर लोग तो डूब्या जका डूब्या ही सपादक जीवतो हो मू डो दिखाण लायक को रैयोनी ।

सायरा साची कैयी है क 'लुगाई रो खसम मोटघार अर मोटघार रो खसम मागतोडा ।'

सपादक रै जद च्यारा पासी सू चू टाचू टी लागगी जद उण साच्यो "अबै तो कूवो-पासी वरणो हीज पडसी ।' मन मे पक्को भरोसो हो कै "चदो चालू करता ही करजदारी रा मोरिया पीऊ पीऊ करता उडता निगै आसी "

सपादक रसीद बुक साभ'र नीसरयो, आपरै अखबार रो मासिक-वार्षिक शुल्क वसूल करण रो श्री गणेश करघो ।

बो दामा सारू उगाही करणनै अगूण सू भायूण अर दिखणाद सू उतराघ, झंडै-छेडै, पासं पसवाडै गळी-कू चळी, हवेली दरुजै, हाट-घाट अर बनार सगळै सरम नाह्या फिर भायो वामण रो बेटो जाण'र एक साल रो चदो दियो पण रसीद भरण री मनाही करदी । उण सपादकनै अखबार काढण मे

जिकी अखड़ी अखलाया आवै, बार बार मे पण चरचा करो अर देश-समाज' री मोटी सेवा अखबार मायकर हो सके री पण विचार कियो। उण सपादक ने अगद आळो पण रोप'र अखवार काढे जिण तुमार काढण रो उमावो चढाया। उण सपादक र तो चित्या री हाडी खद बदावै ही।

वाकी रै लोगा तो जद सपादक छापै रा दाम माम्मा तो वा निराताळ री वाता कयी।

एक जणै तो कै यो कै अँडो काई सपादक जिको पाठका सू बत्ती पईसाने समझै। म्हे तो आज तकायत आही सुणता आया हा क 'मिनखा री माया है अर रूखा री छाया है।' पइसो ता हाथ रो मँल है। दिया लिया तो डूम राजी हुवै, मान बडो बतानी "म्हे तो सदा सू सपादक जी रो मान करता आया हा जद थे म्हारी दूकान आवता जणा म्हे सगळा पगा ताण थार साम खडा हुय जावता, आ तो था सू पण छानी कोयनी।

एक दूजै कयी— सपादक जो महाराज, थे तो सजोग सू वामण रा बेटा नीसरग्या, वामण तो खाली हाथ जाड्या ही राजी हुय जाया कर पण अवे ओ क बरतारो आयग्यो कै वामण हो लोभ-लालच करणन ठूकग्या।

एक बीज आदमी आ कयी—'ना महाराज, कागदा रा वाय रा पइसा, थे अठे अगवार फँक जाता जद म्ह उठा र बाच लेता ता पछ उण मे गुठ घाल'र काई ना दे देता। गुडरा म्हे म्हारा पईसा ले लेता अर अखवार रै पाना रो थाने पुन हो ज्यातो जणा म्हे बापडा वाणिया थाने पइसा के वातरा देवा अवनै कणाई सराध वावडो आवण दग्गो दूजै वामण ने नी जिमार

गाने जिमा देसा। म्हारै ऊपर तो आप मेरवानगी ही राखी
 लेनी सू लगार सिझ्या ताई पावलै री मजूरी करा अर वोमेसू
 नी घाने द देवा तो म्हारा टाबर किने खासी ? के वै म्हार बटका
 भरसी ! आवो तो थारी दूकान है पण पइसा मागणने ओज्य
 हारी दुकान पर पग मत भेल्या ।”

लोगा री अँडो बात्ता सुण'र सपादक रे काळजें मे लाट
 ओ खडो हुयगी। जीव रे मढ माय चित्या री भालर बाजणने
 लागगी। अब करे तो वो के कर, काय मे हाथ घाने। पछ-
 गतडी सपादक र मरण आळो ढग हुयग्या।

सपादक नै घणा भु भळ आवें सास उतावळा चालण नै
 लागग्या। चित्यारी चिणगारी जुवाला घण'र डोल नै 'धपड-धपड
 ाळणने लागगी, पण उपाय के ? सगळा साग आ ज्यावें पण
 इसाळो सांग पइसा कने हुया तू हीज आवें। नाणो कने हुया
 नी काम पेज चढें।

सपादक कने की लुगो-तुगो हो वो ठडें दिना ही खा पूगे
 केयो। सपादक नै खाली ओ हो भरोसो हो कें “अखबार रो चदो
 भलो कर परो'र बजार मे पल्लो राख लेमी पण उण री आ
 उप पण खाली गई।

सपादक रो माथो अब की काम कोनी करे। वो इण कामने
 किसे घड बैठाय, आ बात उण रे समझ मे नी आवें।

सपादकने छेवट एक उपाय सूझी। उपाय अँडो कारगर
 के जिण सू सरब दोस गधेडें रे सीग ज्यू लोव हुवता ताळ
 कितरो'क लागे ? आ उपाय सूभता ही सपादक रो मूडो
 वेफिकरी सू पळपळाट करणने लागग्यो। वेफिकरी रो बायरो

सपादक रं चै'रं मायं आयोडी उदासीनं धूरन उडाव
उडार लेयग्यो ।

अयं सपादक इण उपाय सू साखा चाता पूठो काकु
आ उपाय सपादक सवा सालाना वरसी जिक मे फरक न

जे सपादक इण सोच्योडी उपाय सू हट ज्यावं ता सप
मे "अं डी हुवै कं खाव कुत्ता गीर ।"

सपादक न सूभियोडी उपाय इतरी सोरी भर इतरी सप
को ही नी पण वीची उपाय के ? भिनख आपर मान
राखण सारु दुखन पण घणो सारो सुख मान लिया करं । सपा
रो सोचियोडो ओ सुख अं डो ही हा, मतलब कं ओ हो तो बजरा
दुख पण इणनं सुख कर'र मान्यो अरदिन दशा देस्या ओ सुख ही
हो आगे ठाकुरजी नं लाज है ।

इण उपाय रा भाव सपादक महाराज रं सू डी ताई खामखा
छलीजग्या हा ।

सपादक नं भागतोडा रो भा भोज सू पण वती लाग्या
जमडा मु दमडा रा मागतोडा खोटा ।

सपादक आपरं सोच्यं उपाय रं मुजब सहर मे ए
भौके गी जागा देख'र वो आसण विद्या'र बैठग्यो । अन्न-जळ
त्याग कर'र अनखन रो वरत भाललियो । सपादक आप रो भौ
नं तंडण सारु अनखन आळी उपाय ही सोची ही ।

सपादक जद अं डी जागा आसण जमा'र बैठग्यो तो स
रं लोगा न ठाव लाग्यो दुनिया तो मजा री देख है । लो
सारु ओ एक तमासो हुयग्यो जणा पण लोग भेळा हुवणनं लाग
साग सपादक रं ओळं दोळं कडोजूप'र बैठग्या । मू डा जित

त, लोग बाक बाक टंग टंग लान्हा । कोई कै-
 गदक भाडार है तो टोडी में बाधा नार लाधना रो कल
 भायो है । नींती कैंयो— "अदकाई चोरा फेंत पता हुआ है
 कान पास करावा, मारु ओ हठ रोन्धो है ।"

कोई कैदें— "सुनडाळ परयो आई है, इरा बानने भादा-
 ष्या हो जाणु सके है । सपादकनो इग परवी ने मोलावर
 विला ।"

अंठो बाका डाक बात जद लोग सुगो तो और धरत तोर
 वा हुवरने मारा । एक गद रा दो गाव भेडा टुपना ।
 रें नहर में टंग बात रो हाका फूटयो । जिको नी जाणतो
 । तो वो नी सपादकने जाणनने लागयो । चिमटकारने तम-
 कार है ।"

मानोडाने इरा भायलो बात रो पतो लागयो हो के
 पादक मानोडा सू उधवर मरणो तेवजियो है । जणा व पतो
 नी आया काल ने आपाने कोई दोस्यारी मानेर कठैई हथा रे
 नम में पण्ड नी नैवे ।"

जिकी कु वराणो सपादक ने एग परस रो पदो दिभो हो
 एणने ठा लागयो तो वा पण सपादक बने आई । वा सुगार्ई
 गेटे मा-बाप रो अर भण्ये-गुण्ये घराणे री ही । मालवार रो
 जातन जाणन आळी ही, इसे कागारे हाणी-साभगे सावत
 जाणती ही क अखबार काढणो मगनो हाणो बांधणो है ।

उण सपादकन पूछियो ए- 'आ मगू तीमड़ी ती ।"

सपादक आपरे मामले गग री रीग बात जगाने मताई ।

सपादकने उण लुगार्ई ऊणो-णीचो रीग'र गणो ही ।"

क अ ड मिनखा मायें अणसो कर परो'र नोनारायण री इरा द
 न इस तक नाश करणो आछो कामनी । अं धारें अखवार
 प्रायक खाली दीसतरा मिनख है थाअौरं असलो रूपनं नीं ओडख
 प्रार असली डौळ न जाणन सारु थे म्हारै इण ओडणिय मायकर
 देखो पच्छें मरणं अथवा जीण री विचार लेया ।'

रुगाई सती ही जद सपादक उण रें ओडणियें मायकर
 लाग़ा माय निजर नाखी तो उण सती लुगाई र छाडा सवरा स
 लाग़ ओडपिचोळा जिनावर दोस्या । कोई मिनख तो लूकड
 रूप मे ता कोई गादडो कोई विरगडो अर कोई-कोई माकड भाक
 जिसा जगल रा जिनावर दोस्या । वा मे मिनख एक ही पर
 निजर चढियोनी ।

ओडणियें मायकर छण्योडी दीठ मे लोगा री बारलो अर
 मायलो रूप भलीभात आरया लाग्यो दीसग्यो जद पण सपादक
 चटकसी आप री आसण काख मे दाव्यो अर आपर घर कानी
 चाल वहीर हुयो ।

सपादक सोच्यो अ ड मिनखा माय अणसो कर'र मरणो
 जात्रक पागलपणो हो । मरणं जीण री कीमत मिनख हुवें तो जाण
 पण अ तो बापडा जिनावर

रामू-धायली

दो पइसा री कार मजू रीकरण सारु मुरघर रो वासी रामू जाट पजाब कानी गयो । रामू आप री जोढायत धायलीनै भी आप रै साग ही लेयग्यो । दोनू लोग-लुगाई मंगत-मजूरी कर दा पइसा री आपर घर मे ओत घालसी । बिया ही धायलीनै रामू लारै किए रै कनै छोडतो? जाण्यो काळ कुसमो है । पजाब कानी जाय'र पेट भराई करसा । आ सोच'र रामू आपरै गाव सू धायलीन सागै लेय'र बहोर हुयो ।

आगै पजाब मे जाय'र रामू अर धायलो एक मिय र खेत मे हाडी वाढएनै लागग्या । जद अठै काम री नाको आयग्यो तो रामू दो पग आवा दिया पण अरुव रामू धायलीनै साग नी लेय जा'र इणी मियन मानख आळो आदमी जाण'र सभळाय दी । रामू जद अठ सू जावएनै लागो जणा मियनै कयो क "धायलीनै सोरी रास्या । ओदरण मत देया । में वेगो ही पाछो आषतो धायलीन अठ सू लेय जासू ।

मिय पण रामूनै पूरो-पूरो भरासो दिरायो कै "धायली" कान सू तू कोडी जितरी भी चित्या मत करी ।

रामू सीधे सुभाव रो हो जणा पण उण मियै री बात रो अकीदो कर लियो अर आप उठै सू आगै चाल बहीर हुयो ।

आग जाय'र रामू काम री पडताळ में लागग्यो । काम री

विष बैठे मू वो काम मे भूत हुय'र लागग्यो । काम री नई कमी को ही नी जद रामू र मनूरो री कमी क्यू पडती ? एतु उपरली रत आई जतं इकजाई काम मे लाग्यो रैयो ।

रामन र-रै'र धायनी चैत आवती पण वो दो पइसा री आवत री सोरप मे धायली काने जावत मनन रोकर राब लेवती ।

इया काम करता करता रासूने आधो जेठ वतीत हुयग्यो । आधो जेठ बीतत बीतत आधो बादला छायो अर मेह घररायो । बीजळया पळका मारणने लागगी कं रामू रो जी' गाय कान टोण डियो तणावें ज्यु आपरें देश काने तणावणन लागग्यो । रामू इण वेळा आप रो जाळ आळो खेत चैने आधो जिको मातरो ढेर हो ।

रामू सोचें " पैला वेगो देश जाऊ अर जाळ आळ खेत मे हळ खडो कर । कवात है क जेठो बाजरो अर माभी बेटा भाग आळने मिल' । रामू गेत जोतण री धुन मे एकरगी धायली ने भुलाय दी । वो धायलीन आप रै सागे लिया विना ही पाधरो आप र गाव ढूययो अर सजत बैठा'र जाळ आळो खेत बा'यो ।

खेत मे लीली छत्रो आळ री कीप सू आध्या धान लाग्यो सुरगो सावण अर भर भाडूडो सातरो हुय र आयो । सा'र मे वा छिन्न छाजो कं जाण नगवान साग्यात ही आय विराज्या हुव । चाततो सो कातोसरो । टीडमी मतीरडी जोई लाध । कुळया-कावडिया जोम तो निरपत हुव ।

राम र खेत मे ऊचा डूचा । डूच पर वठयो रामू रागली उधेरे पण रामून धायता प्रचता आव धायली विना साही सुवाड

रामू ऊबेडू चंपर वठो-वैठो बात मत्रं कै बिना पिराणरै डीलसू अर बिना पहिया री गाडी सू जिण तुमार कोई काम सजै नी उणी तुमार धायली बिना रामू रो कोई काम सरै नी ।

रामू रो मन पलक-पलक धायली धकं धावै उणनै अब धायली बिना धाप कठै? धायली बिना रामू आकळ बाकळ हुयोडो र'वै । बो सतरो बतरो सो हुयग्यो । जाट रोही री रूत मे मेह वरस्या बीजा सगळा काम छोडर पला हळोतियो करणो चा'सी पण पच्छ तो तुगाई री चितार कर हीज ।

एक दिन रामू समग आधी रात रा उठियो अर गैलै सारु चायतो चीजा आप री पेशी मे जचाई अर धायली नै लावण सारु पजाव कानी धूनाडै चाल खडो रेयो । तापच्छै रामू आपर पगा न कठई ठाव्या नी ! धायली रै कोड मे रामू चाल्यो तो इसो चाल्यो वै आठ पोर मे सागी अ'डै जा पूग्यो ।

रामू ताकड कर'र सागी अ'डै पूगतो गयो पण अठै रामू न समचार की भूटा हीज मित्या ।

जिक मियै रो रामू इतरो घणो विश्वास करयो हो, वो ही रामू र साथ इण तक रो धोखो करयो क उण धायलो न भगरार आपर घर मे घालली

अठै आवता रामू जद आ सुणी तो उण रै जो मे कई बाकी नी रयो । रामू रै एक चढै एक उतर पण बो अब करै तो के करै गतागूम म की वैठी नी । रामू रो काळजो होळी बुके ज्यू बुकण न लाग्यो । होळी भळ सी भळ उठणनै लागगी । उण रो डील तोवो तप ज्यू तपणनै लाग्या । कणा ही रामू आप री भा सप पर च्यार च्यार चोसरा नाही तो कणा ही बो मीयैरै विश

वास घात री मात नी चंती कर'र खाग आसू टळनावें । पण जा राम रा अठ आगळ जितरो ही चाली नी । रामू जे अठरी पचा यत मे आवात राखे तो ही पण उणी तो अठ सावलसर पण आवती दास नी । रामू बातनी च्याह फेरा सोव'र अन्ते पत्त ढोलो ढगर हुपर वेठग्या पण इस तक ढोलो हुपर इस तक ढोलो हुपर वेठा सू काम कू कर चाले । आखर रामू जाटरी वेठो हो, कबत मे कंयो है वं नट विद्या आ जावें पण जट बुद्धि का आवैनी । जणा रामू ने गोई न कोई जट बुद्धि उपजावणी चाहीजे ।

रच्छे रामू वय पाछ राख हो, उण एक जट विद्या उपजाई अर उणने पजोखी ।

रामू आपरो वेश बदळयो माताजी र भोपे रो सातरो सा साग वणायो, कड्या मे मोटा-मोटा घुघरा बाध्या एक हाथ मे डेन लियो अर बीजोडे हाथ मे काचळी बाधयोडो तिरसूळ भाणी अर ता पच्छ उण घर-घर फरी घातणी सुरु करी । रामू घर-घर जायर रागळी उधेर अर तान तोड । मू डे मे गोळा गिटकाव अर मू डे सू सूझया नीसारें । छुरी पलारें अर आपरी जीभन डाळ-डाळ कर नाख । हथाळी पर वास्तें जगाव अर मू ड मू भळा काढे । राम जिकी दिश मे मू डो फोरें उणी दिश मे लोगो रोडडो जूप ज्याव । रामू घर-घर अर गळी गळी मे घायती री खडग जगावें । इया करना-करता अर फिरता फिरता एक घर मे घायली रामू र आरया दीठ चढी । दोनू च्यार निजरा हुया । दोनू ही एक बीजन देव'र हरकण लाग पण इण रा किणी न जामनी लाग जाव जद पण वा अंढा मनोवरोने लकोई राखी ।

लौ रामू कान भरवा मीट सू देरयो अर नापाछै आपरै अतस
ठिनै जणावण सार पगा री आगळ्या सू जमी वृचरणनै
गी।

इएसन सू रामू जाणग्यो के घायली अठे कितरी उणमणी
घायलीन आप रो भेद बतावण अर आवण री जुगल जतावण
रामू गीत उधेरयो -

मेरी राम घायली, उतराधं कूव पर मेरो डेरो ए ।

आगिय मे नीपजै अर मूगियै मे मान

दिन बढिया रे साथ मे तू, दे मिया री छान

पयवी विरग वेश में रामू कनै कोकर जाव?

गसेन मे पूछयो

कठ है घाघरियो कठे घावळियो कठे है चुडले रो जांग

काळी खुखणत्या पंरचा म्हानै

हसै रे गावा रा लोग

मेरी राम घायली ---

काव दबाय'र लायो घावळियो

घाघरियो म्हारै हाथ

ऊचड चूचड मोचड पंरचा

चुडली हाथी दात

मेरी राम घायली

तू मत जाणी काळ पडयो है

गैरा घणी समामी

घोणा धापा घरे मौकळा

गावै गीत दमामी

मेरी रामधायली-----

काकड़ बोर मतीरा पाक्या

पाक्या टीडस वैर

जाळ आळा खेत पाक्यो

सुरगो बीकानेर

मेरी रामधायली -

रामू गीत गी सैन सू आपरें प्रदेश री माली हालत रो व्यो
बता दियो क "धायली, आ नी जाणै क मुरघर तो काळा
कुटीज्योडो रैव ।" रामू समझायो कै हे धायली, गाब सू उतरा
कूवो है उठे मेरो आसण है मतलब कै मे उठ तने उडोकतो त्प
मिन सू तू दिन बदे-सो मियरी छानडी मे मु गीयमान वास्ते
चिणागदरी नाख देयी छान जगणन तागसी जणा मिया तो उण
बुझावण मे लाग जासी अर जद तु मौको देख'र मेरे क
उतराघ कूवें माथे दौडकर आज्याई ।

रामू कंधो- 'तू आ ना सोची कै थार सारू धायरिय
धाबळियो कठ सू आसो, में तो काळी खू खणती पैरधा हू इण
देख'र रस्तें रें गावा रा लोग हससो कै इणन कठे सू उठा ला
पण में सन चीजा साथ लेयर आयो हू । हाथी दात रो मुठियो म
ऊची नोक री मोचही पण साथ लायो हू ।

तू आ ना सोची कै आपा रें मुलक में सैलोग काळ कुसमो
पण अर्बर्ब समामो तन्ही है । रोही मे साग सरकारी सा
टीडसो काकडिया अर मतीरडी मिलणने लागगो है । कातोस
(बनफल) जयरो है ।

अंतके बीकानेर री धरती बडी सुरगी है । आपा रो जा

ठो खेत पक्काण पर आयो खडो है । घर मे गाय व्यायोडी है ।
य, छाछ री ताई कमी नी है ।

तू मेरी बतायोडी जुगतो वैठा'र मेरे कने दे ठोका'र आज्या
पा अडा घूपाई चालसा क भिया रा बाप भी आपा नै नावड
सक ।

रामू री एक-एक बात घायली रै रू रू मे जमगी । उणरै
य-जियै मे ऊजळै धोरा री चितार जामी अर जाग्यो सनेपी
हेज ।

घायली रामू रै वतार्यै मुजब खूटकलो करघो अर आख
क नितरी ताळ मे जा साकडो करघो उतराघो कूबो अर
पाछै रामू अर घायलो दिया तेतीसा कं जाये बूचकी तीखा
न । जणा हो किणो सायर कंचो है कं नट विद्या सू जट बुद्धि
पोलो पहे ।

भाळू भी गजब री भाळू है । नौकरी री भाळू मे सर समुदा दफतर छाण राख्या । नौकरी लागणो नी लागणो भा नै मारै नही पण नौकरो री भाळू मे भाळू तिल जितरी भी क पडण नही दो ।

भाळू नै आज ठा लागी कै आपार इण सैर मे रेडियो स्टस चालू हुवण आळो है । उण सोच्यो "उठे और भाळ कर र वदास नौकरी री विघ्न लाग जाव तो" ।

भाळू किणी जाणकार आदमी वने सू अरजी लिखाय । क- मने आपर अठ गावण-बजावण साह राख लियो जाव" भाळू दफतर मे जाय'र औ प्राथना पत्र पेस कर दियो अर लोगाने, वारे बैठ्या देख'र आप पण उणा कने वार बैठग्यो ।

इण दफतर रा मोटा साब दूज अफसर करता घणा आद्य बखतो-बखत काम पर आवणो अर ईमानदारी सू आप रो दा निभावणा । अंडा अफसर हावा ठापता लाव ।

[साब दफतर मे आवता ही उमेदवारा री अरज्या री जोवणने लागग्या । साब नै रेडियो स्टेशन' माथ काम करणि साजि'दा री घणो पण जरूरत ही, इण वास्त साब इण काम स इ-टरव्यू लेवणो चावता हा कै जिका अठे रै प्रोग्रामा मे सा वजाय सक । भाळू री अरजी अक साजिग्दे री अरजी ही, जि

सू साब रो निगै उए ऊपर सगळा सू पैली पढी ।]

सात्र अरजी देख'र [आपो आप] 'यह 'प्रार्थना पत्र' किमका है ? अर वा सरसरी निजर नू पढ परा र] टन टन घटो बजाई । घटो रो अवाज सुण'र चपडासी आयो ।

चपडासी [हाथ जोडतो थको] 'हुकम सर !'

साब 'अरे, देखो तो! यह एक प्रत्याशी है, -- नाम के जरा उसे भिजवादो ।'

चपडासी 'यस सर !' [केय परी'र कमरं रो चिका नै चोर'र बार आयो अर प्राथान हेलो पाडघो । हेलो सुण'र भाळू चपडासी सामे आय ऊभो हुयो अर आपनै ईज हेलो मार'र बुलावणियो बतायो । जणा चपडासी प्रत्यासी भाळून चिक कडखै कर परी'र साब रै कमरं मे वाड दीन्यो ।

साब [प्रत्याशी नै देख'र] क्या नाम है तुम्हारा ?'

भाळू 'म्हारी नाव ता भाळू है सा ।'

साब 'भाळू ?'

भाळू 'म्है सा ।'

साब इस दरखास्त पर तो भाळू नाम नहीं है । [प्राथना-पत्र दिखा र]

क्यो, यही है न तुम्हारी दरखास्त ?'

भाळू 'म्है सा ! है ता आ ही ज ।'

साब 'फिर यह नाम-भेद कसे ?'

भाळू 'इए मे नाव-भेद कायरो है सा म्हारी बोलतो नाव तो औ हीज है, जलम रो नाव खाली गोपाल किसन है ।'

साब , 'हमे जलम और भरण से कुछ मतलब नहीं, जो

तुम्हारा असली नाम हो, वही बोलो ।'

भाळू 'म्है सा' । वो हीज नाव बोल सू ।'

साब हा तो तुम्हारा असली नाम कौन-सा है ?'

भाळू 'म्हारें देखणें मे तो सैग नाव असली हीज ह, आपन जिका-जिका म्हारा नाव नक्ली लागें, छोड देया ।'

साब 'तुम्हारे सभी नाम असली हैं ?'

भाळू 'हा सा, म्हारी जाण मे तो स' ही नाम असली हैं ?'

साब तुम्हारे और कौन-कौन से नाम हैं, जरा बताओ तो ?'

भाळू 'हा, ल्यो सुणो मा ।'

साब बोलो ।'

भाळू आपरें नावा रो इतिहास बतावतो थको आप रा न्यारा-यारा नाव बतावें है —'म्हारी मा रें टावर को जीवता नी जणा घर आळा म्हारी नाव फूसियो' कढायो । म्हारली भूवा र पण 'लाधियो, नाव जच्यो । वा म्हन 'लाधियो' कवण ठूकगी । नानाणें आळा र 'कचरियो' नाव दाय आयो जणा पण व 'कचरियो-कचरियो' कै र हेलो मारण न लाग्या । पण म्हारली वैन रें 'कोभियो' नाव राखण रो जची अर पडोस्या म्हन 'कुरडियो' नाव वंय न हेलो पाडयो । किणी मन 'मगतियो' कयो । चौक आळा म्हारी नाव 'भाळू' रखायो । चौक आळा रो क'वणो है क तू आळी-मदी री भाळ राखण आळो है जद ही ज तेरो नाव भाळु है । वा रा कवणो है क तन इणो नाव सू नावरो मिलण मे मदद मिलसो ।' भाळू भाग बोलतें वंयो अब आप क'वो जिको नाव पक्को कर'र राख लेवा ।'

साब । 'तो क्या तुम्हे गोपालकिसन कोई नहीं कहता ?'

भाळू कैवै सा । पण खाली म्हारी मा ही ज कदे कदास मन गोपालकिसन कैवै ।'

साव बस । तुम्हार इतने ही नाम है या और भी नाम है ?

भाळू 'हैण ताई तो म्हारा इतरा हीज नाव है,आगै जे आप कोई नाव राखस्यो, जिको जचाय लेस्या ।'

साव तो क्या, रोज-रोज नाम बदले जाते है ?'

भाळू बदळण आळो चायै सा, नाव बदळनै मे किसी रकम लागे ? म्हारा अँ नाव बोलता नाव तो है म्हारै चौक आळै दूजा छोरा रा नाव तो इसा है कै बीजी जागा जोया ही को लाधै नी ।'

साव [विनोद भाव म] ऐसे दो-चार नाम लो देखे ।'

भाळू [भोळप री चादर ओढ'र] 'अेऽ । रोडियो मीडको, बु'गजियो, फडादयो, गोडिमो गुड ने काकडियै री पतळी फाडी ।'

साव 'ये आदमियो के नाम है ?'

भाळू [डोढ मे] 'नातर के डागरा रा नाव है सा ।'

साव अच्छे नाम हैं भी तु'हारे और तुम्हारे चौक वालो के ।'

भाळू इणमे अचू भै आळी काई बात हुई सा अँ तो पण बोलता अर ओपता नाव है,बोजा छोरा रा नाव तऊदरियो,कूकरियो अर मीगणो छाणा जिसा तकायत नाठ कढायोडा हैं ।'

साव खलो हम तुम्ह रा नाम गोपालकिसन ही मान लेते है ।'

भाळू , नी सा । इतरा दौरा हु'यर क्यू मानो,आप रो ऊदरो-इ दरो राजी हुवै जिको नाथ मानो, आपरै जे हाडोहाड गोपाल-किसन ही जचग्यो हुवै तो भाव गोपालकिसन ही ज राख लेधो, म्हारै तो किसै ही नाव री अडकास कोनी ।'

साब हमे तो तुम्हारा नाम गोपालकिसन ही पसद आया है आर यही तुम्हारा असली नाम है भी । तुम्हारी दरवास्त पर भी यही नाम लिखा है ।’

भाळू ‘आपर औ नाम जचग्यो तो सगळा सू हो ज सावळ ! गोपानकिसन नाव राखण मे कावळ काई सा ?’

साब ‘अच्छा तो गोपालकिसन ! इससे पहले भो तुमने कही नौकरी की है ?’

भाळू ना सा, नौकरी चाकरो पला तो म्है कठई कोनी करी सा पण कई जागा नौकरी री पण भाळ जरर करी है जिकी री आपर अठ आवता नाको पोयो है ।’

साब ‘अभी तय कहा हुआ है ? अभी तो तुम्हारा इन्टरव्यू ले रहे है, तुम यदि पास हुए तो नौकरी भी पा जाओगे ।’

भाळू [पास री वास्तविक भाव नही जाण र] में तो सा आपर पास होज रेंय सू , आपने छोड र कठ जाऊ ही कोय नी ।’

साब पास से मेरा मतलब है यदि तुम इन्टरव्यू मे निकल गए तो ।’

भाळू [भळ भी साब र कवण री मतलब नी समझ र] में तो निकाळयो ही ज कोनी नीकलू सा ।

साब नौकरी ती तभी मिलेगी जब तुम योग्य सिद्ध होगे ।’

भाळू ‘तो क नौकरी जोगी अर सिद्धा [‘जोगी’ अर ‘सिद्ध’ अर जाति विशेष] नै हीज मिन ?’

साब ‘हा-हा, नौकरी वही पाता है जो लायक होता है ।’ साब आगे बोल र केयी-‘अच्छा अब यह बताओ तुम्ह कौन-कौन से साज बजाने आते है क्या, तबला बजाना आता ?’

भाळू ना सा !

साब सारंगी ?

भाळू ना सा !

साब हारमोनियम ?

भाळू ना सा !

साब तो क्या वेला आता है ?

भाळू ना सा ! वेलो तो बजावणो कोनी आवै ।

साब ढोलक आती है ?

भाळू ढोलक रो काई आवै सा !

साब तो क्या, लावणी-दूहो पर देशी ढग पर नगाडा-

गाडी बजाते हो ?

भाळू नगारा-नगारी बजावण रो के काम पडै हो सा !

साब , तो क्या तानपुरा आता है ?

भाळू तानपुरै री तो खाली नावहीज सुण्यो है सा बजा-

णो पण मनै जाबक ही आवै कोयनी सा !

साब तब तुम्हे क्या बजाना आता है ?

भाळू आवै तो है सा !

साब अच्छा, तुम्हे फू'क के बाजे वासुरी अथवा इसी
टेगिरी के दूसरे बाजे आते होंगे ?

भाळू ना सा, फू क तो खाली चूल्है मे हीज देवणी आवै

अकडोडिया रा 'फू कला' उढाया करै जणा फू क दिया करा ।

साब तो फिर बताओ कि तुम्हे क्या बजाना आता है ।

भाळू सा एक तो मनै चूडीबाजो अर बीजो रेडियो बजा-

णो आवै ।

साब . [हस'र] बस, यही आता है कि कुछ और भी आता है ?

भाळू और तो सा काखा बनावणी खावै का सावण र महीनै मे स्यादाले मे गाल बजाया करा अर का कठैई आमसभा मे जावा तो नेतावा रे भासणा मे ताळी बजाया करा ।

साब [क्षोभ अर आश्चय मे आ'र] तव बयो बेकार मे इतनी देर तक हमारा माथा ग्याया ।

भाळू मे वामण हू सा, मे किण रा माथा खाऊ, मे तो रोटी भी मुसकल सू अेक दिन मे अे करगी हीज खाऊ ।

साब बयो, रोटी अ'क बार ही बयो दिन मे दो बार ही खाया करो ।

साब . [मन मे अ'डै कमाऊ प्रत्याशो रो डौळ जाण'र-ब'यो] तुम गोपाल किसन इन्ठरब्यू मे फैल हो गये, अब तुम जा सकते हो ।'

भाळू सा ! आजकाल फैल हुया करे जिका रेल तळै कट'र मरया करे मन काई करणो चाहिजे' ?

साब तुम घर जाकर आराम करो, खू टी तान कर सोओ ।

लाखीणी

बात री खरी अर सुभाव सू करडी बरजो भूवा आखै
 बास मे आपरे नाव सू ओळखीजै । इसो आदमी सायत ही
 काई हुवै, जिको बरजो भूवा रै थोडो-घणो लवटधक नी वाज्यो
 हुवै । लुगाया गे ही-ही कर हसणो, अर मोटयारा रों खो-खो
 कर दात काढणो भूवा नै अळगै-आतरै ही को सुवाबतोनी ।
 अँड ही किएणी कारण सू वा जद-कद ही बान टोकती तो
 उणा रै मू डै मू बासतै सो बरसतो । भूवा रो सामनो करै इती
 हिम्मत कोई री ही की ही नी । पण, आ ही बरजो भूवा जद
 बास रै टावरा न घमाचीकडी मवावता देखती तो ना तो बा नै
 बरजती ही अर ना वा पर भूजती हो, उल्टै रो राजो मन सू
 वा री बाल लीलीनै निरखती रवती । एक बडो गुण जिको बरजो
 भूवा मे हो वो आ कं वा भला ही घर रै गोरख घ-घं मे उळभी
 हुवो भला ही गाली बठी-राम रो नाव लेवती रेवती । इण
 कारण वा रो पोपलो मू डो पालो चरती बकरडी रो सो हरदम
 हालतो हो रैवतो ।

आज तो बरजो भूवा रै च'रै माथै सी-सी सळा पडी दीसै
 आख्या खासी भली माय बँठगी है, उणा रै माथ रा केस वुगलै
 री पाख्या सा धोळा-घप्प ह्यग्या हैं अर हाया पगा री चामडी

मरचोडै साप रो सी लागण लागगी है । अरवतो बा चालतो फिरतो अंडी लाग जिया कोई गम्योडी सूईनें सावळसर जोवती हुवै । पण, जुवानी-गाळै आ ही सागण बरजी भूवा चालती जद घोडावण सी लागती । मुठिया काचर सी आग्या गिगनार चढ योडै चाद सो मू ढो अर काचलो नाख्योड नाग सो पळपळाट कर काळा भवर केस- सौरभ सू भरचो इण रो ओ सरूप आपरी जात रो अंकलो हो हो । आज बा बात कोयनी । आ तो सगली बीत्योड समय री बात है । समं कोई रै नाळिये रै बध'र को रव नी । वो तो ढळती छावली री तरिया भेळो हुय'र सरकता ताळ ही को लगावैनी । बखत रा बाजा आपर ढग मू बाजता ही रेंव कुदरत रै इण खेलन कुण रोक सक अर केंरी हिम्मत है के जिए र रोक्यो आ रुकै ।

एक दिन वो हो हो जद बरजी भूवा ढोला रें ढमना पर- एीज्या अर पातळिये अर लळवळिये राइवर रें साग इणा रो गठ जोडो जुडयो । मा-वाप जिया किया ही आप री लाडकवर नें धोरिये चढाई । बाप आप री पौच रें परवाण जायर दैन दायज्यो दियो भळ ही मन मे पोमिज्या कायनी । नरमाई सू लोग सामो आ ही कही क "फल ही जाग्या फामडी कर'र डौळिय साम बायली रा हाथ पीळा कर दिया- सगळी सावरिय री किरपा है ।" इ या ही बरजी रें मुसर ही आपरी कुळबहुन छाजलो अक पीळियो (सोनो) घायो अर सेरावद चादी रा ठाव चढाया पण गिनार वण ही को करीनी । कंदण रो मतलब कें ढीला रें ढमकं, हरख- कोडै बरजी भूवा आपर सासर गया । पण, समं रो बायरो अडो चाट्यो जिकें आ सगळी वाता अर सैन मगळ-भावना नें साव मू पी

कर'र नाख दी । जकी बरजी भूवा, सोनैली पवरी ओढ'र रातें हाथा परणे फेरा सासर गई ही वा हीज पाछी आवती बेळा बाळो ओढ'र आई । परणीज्योडो मोटा-मोट आठ पौ'र ही जियो । पेट दूह्यो, नडाछ खा'र आगण मे पडघो अर वो पडघो रो पडघो ही ज रैग्यो हाथा वासण छटग्यो । कोई कारी को लागी नी ।

बरजाने वाप, आपर काळजे र लगायली । बरजा टावर यका सू हीज स्याणी हो अर मा बाप रै घणी लाडेसर हो पण अठे आय'र तो वै ही एकरसी कमजोर पडग्या । फेर जाडा भीच जिया किंवा ओ दुख भलण सारू आपारी छाती माथं मोटी सी चिमाळ राखली । काया किणी री अमर नी हुवे । बखत आया सगळाने ही जावणो पडे-एक टम इसी ही आई के बरजी रा मा-बाप भी पाक पान दाई एक दिन भडग्या । बरजी रै जोध-जवान हुवण सू पैला ही उण रा ओ आसरो भी छटग्यो । पण उपाय काई हुव । काळने कुण ढाब सके ? रोया सू जे की सजतो हुतो तो बरजी न्हार कूके ज्यू कूकन लाग जावती पण वा जाणता ही क बीती न बिसारण' मे ही भलेपो है ।

बरजी हिम्मत को हारिनी । आपरे कडूम्बे रै काका, दादा अर भाया रै सायरे खेती री रत मे दो हळिया बुवाय लेवती अर एक गाय-पाच सेर धार रो दूधारू, बारू भास आप रै वन ही राखती । आप रै घरिये मे रोटी-पाणी करणे रै वाद वा आपरे वाव रै घरे जाय रातने सोवतो । निकमाळ री रत मे जे कठई गाव मे कथा-वारता, सत्सगत हुवती तो वा आपरो काकी-बडियाने सागे लेर'र सुणणने जावती । राम-राम कर'र आप रो बिले रो बखत किया ही पूरो करणो, खाली इतो ही बरजी रो अगे

ज्योडो हो ।

आज री तो खैर बात ही छोडो, पण एक दिन वो ही हो जद बरजी आपरै मायकर सी-सी तीर कवाण निसरता भेल्या पण किमो घोडो घास खाज्यावै । लखदाद है बरजीन जकी, आज रै ई भडै जमानेनै माथै भाल्यो, आपरो पग वो आखडण दियो नी । कैव'न मै कैयो है 'बडो बडा मे नीसरी तातो तवरी बाड' पण आ बात भी तो कबत मे हो कैयीज है— 'सिखरै पहुचता सूखा खोल खिडक बकलाळ ।' बरजी सिखर पीचणे आळी मूरवी नारी ही । जोगण अर पापा सू आनरै रैवण आळी बिजोगण ।

बरजी भूवा जद कद बात चाल जणा कैया करै के 'कोई रटापो काड तो म्हारै जिया काढो नातरं बाळ विधवान आप रो पाछो घरवसावणी पाप कोयनी । पाप तो ओल-ओल पाप नै पाळन मे है ।"

बरजी भूवा आप रै आत्म विश्वास मे आज भी कैया कर-
"आ वेठी बरजी जीवती जागता । फाकी मार कावळ रस्त घालण आळा री जद भा कमी को ही नी पण बरजी किसी री घाको मे आई ? कण ही कैयो तो चडूड पडूत्तर दियो क घे काम धान हो छाजै । बरजी पराय पुरस रे को उधनी, । को वधनी जिक्की तो को ही वध ।"

बरजी भूवा रो कैवणो है क जेद म्हे म्हारो रटापो साबळकर काड सकू तो दूजै मिनखा नै म्हारै जीवण मे हक्षप करेण रा काई इधकार है । जे कोई बदबोई लिडाव

णा तो केठा'क अंडी सलना देवणी भी आछी पण जद कोई गीरा बण'र जहर झाल तो पछे कोई द्यू पाल ? लोगो रो रोच्योडी बाता सगरी ही सामळ ठूवें, आ बात बरजी भूना न मानेनी ।”

आज आखें गांव मे बरजी भूवा हिमताळु अर लासोणी हुनाई गिणीज । आठ बरस साठ बरसा रें इवखतनें किणी जे निखें सू वाळाया है तो वा नात्र बरजो भूना है - अर फकत बरजो भूवा रो ही है ●

लकड्या रो लादो

पूरियो ऊग-सुवाणी लकड्या रो लादो सहर लेय जाव अर सहसा- दाम बट लावै । दूजा, लाद आळा, जे पाज रिपिया बट ता पूरियो दस । जे कदास दस नी बटें तो साढी सात रिपिया मे तो कसर पडण हीज को देवै नी ।

पूरियो सदा आळी दाई आज भी सदर मे लादो बेचणन आयो । लादे सू लदू चोड ऊठने सागी जागा लाय खडयो करयो । थोडो ताळ पड्ये एक लेवाळ आयो अर पूरियने पूछयो लाद र के मोन ?”

“थे ही कयदयो ।” पूरियो लारै सू धोतियो भडवाँ उभो हुवते कयो ।

“घन थारो है तू ही कय । ” लेवाळ बोत्यो, “के दा तेसी ?”

पूरियो बोत्यो, ‘मोलाई करू का एक ही दाम कय देवू ?’ लेवाळ ‘एक हीज दाम कय, म्हार भोगे पडसी ता लेय तेसू, नही थारो घन थार कने है ।’

‘लादे रो मोल पैली यको साढी सात रिपिया घम्योडो है ।’ पूरिये कयो, “अवै थ देवो जिवा दाम कय देवो ।”

लेवाळ बोत्यो, “साढी सात घणा है ।”

पूरियो—‘मैं तो थाने लादे री घामणी हुई जिकी बताई है ।’
 ‘आ दामा मे तो, जिके धाम्या है, धो हीज लेसी । हू तो
 रिपिया पाच रोकडी देसू । “लेवाळ केयो, “नाखणो है तो
 आवगे ।’

पूरियो बेचवाळी र साद मे बोल्या, “इ या ना करो, सूल
 जचा’र केवो, लादो सातरो है ।” पूरियो आगे बोल्या, ‘लकडी
 नू वी अर साव सूकी हैं, लादा लेय जावो, चूको मत ।”

लेवाळ पाछो बाल्यो, “लेय जावा क्यू कर ।-दाम-नू सावळ-
 सर नय [लेजावणो तो है ही, पण मोल-तोल सावळ बठचा
 नय जावा’क ।”

‘ मैं तो केयोनी क साढी सात रिपिया धम्योडा है, पण उठे
 नादो डागळ पर नाखणो पडतो जद पण मैं उण रे नाख्यो कोनी ।
 वोजा, मोल तो ओ हीज धम्यो हो ।” पूरियो सोदो पटावतो
 बोयो ।

लेवाळ पाछो घिरतो बोल्या, “म्हारै तो को डागळ पर
 नाखणो पड नो अर न तिपडतै ही । घणी ही सोरी जागा है,
 गु भारिये मे नाखण है । मारग पर खोल्यो अर भाय नारयो ।”

आ तो सावळ है के लादो सबकी जागा नाखणो पडसी पण
 ये दामा मे घणा हेठा बोलो होनी । “पूरियो बोल्या, “कई सूल-
 सर कवो तो लादो नाखू परो ।”

लेवाळ पाछो केयो देखलै भाई । थारे पोसावे तो नाख
 नीतर घडी-खण और तप लै । सागोडो भाखतो हुया नाख देई ।
 आपा रे तो को मोडो हुवैनी । नाखणो हुव तो जद थारी दाय
 आवै, हेलो पाड लेई । वो सामलो बारणो म्हारे घर रो है ।”

पूरियो—“जणा की सावळ दाम कैवो ।”

लेवाळ—“में तो सावळ हीज कैया है ।”

पूरियो ‘कैया तो है, पण लकडचा घणी है ।

घणी कितरी ?” लेवाळ पूछ्यो ।

‘लादो पूरो साढो सात मण रो है । पूरिये उयढो दियो ।

लेवाळ—“देख लै भाई ! घणी-थोढी करमा री ।”

पूरियो केई ताळ सोच’र लेवाळने कैयो, ‘धे चालो, हू देखाणी
निगं करलू नही स थार नाखणो है हीज ।”

‘कर लै ! चोखी तरा निग करल ! कठं ही जे बत्ता दाम
बटं तो बट लेई लेवाळ बोल्यो, “पाच मे नाखणो हुवै तो आपा र
आय जाई ।”

‘ठीक ।” कैय र पूरियो उण जागा सू चाल’र सहर र
गोरवे-सी आयो अर ऊठने जेखाय’र उण एक लादे रा दो
लादा करघा । एक तो उण जागा ही रास दियो अर दूजोढो
पोलो-डीला बाध’र लेवाळ रं घरं आयग्यो । पूरिये उणन हेलो
करयो ‘लो नखायलो लादो । कठं नाखणो है ?”

हेलो सुण’र माय सू एक मिनख कयो, आयग्यो के ?

‘हा ।” पूरियो बोल्यो, ‘जागा बतावणनं टाबरनं ही मेल
देवो, वो वंसो बठं हीज नास देसू ।”

लेवाळ बोल्यो, ‘आवा हा ।”

‘धे भावे घठं आवण री तववील (तक्लीफ) मत करघा
नी भलाई ।” पूरिये कैयो, ‘घर री हीज बात है । टाबर वसो
जठं ही लादो जचाय र नास देसू ।”

लेवाल—“म्हारें घर मे तो हू हीज टाबर हू अर हू हीज
बडेरी ।” भा संय र लेवाळ बारें नीसरयो अर लादरं घाभेर

गरगोटिया काटणन लाग्यो । उण रै चेहरै माथं इसा भाव तिरणनं लाग्या जाणै वो पूरियै री चालबाजीन साव ओळखली हुवै । छेकड लेवाळ मू ढो खोल'र कयो— 'लादै मे तै लकडी कितरी बताई ही ?”

“व वित्ती हीज ।” पूरियै कँयो ।

‘वै वित्ती कित्ती हीज ?” लेवाळ पूछयो ।

‘वै वित्ती हीज, जित्ती पैला बताई ही ।” पूरियै रों भळ पण ओ हीज कवणी हो ।’

लेवाळ—खाली पूछू हू, कितरो वजन बतायो हो तै लादै मे?”

पूरियो वातनै वोडतो बोल्यो ‘वतायी जिको किसी थानै चेतै का नी ? क्यू भोळा बणो हो ?”

लेवाळ—उण बखत तो के जाणा तै लादै रो वजन साढी सात मण बतायो हो ?

“हा, साढी सात मण ही हो”—पूरियो बोल्यो—“अब घणी जेज मत करो, तावडियो चढै, गाव जावणो है । ऊठ भूखो है । लादो वेगो नखावो ।” पूरियो ताकड करतो बोल्यो जाणै कू कर ही सोदो पट ।

लेवाळ पूछना रै सुर मे बोल्यो, “लादै रो काटं पर वजन कराय लेवा ,’

पूरियो—“पण थे तो मुकातै नखावण री बात करी हीनी ।”

“करी तो ही पण ।” -लेवाळ कँयो—“चाल-चाल लाभू माळी रै काट पर लादै रो वजन करा लेवा ।”

पूरियो कई काठो-काठी हुयो पण लेवाळ ऊठ री मीरी भाल'र काटै कानी चाल बहोर हुयो ।

बेटे सुधी बहू

आज अरेवाळिया रो सुस्तावी जोगीर तळाव माथें हो । अठ उणमे सू कोई तबलें मे खीर राघतौ हो, कोई भोभरिया सेवतो हा । अरेक जणो आप री मोज मे अलगोजें भायें टर काढती हा अर अरेक अरेवाळियौ सिराणें भाखलो देय'र आप री कमर पाघरी करतो हो । खाजरु जाटचा तळें सुस्ताय रेंयो हो । कदेई सो किणी धेटिये री नस हिलण सू टाली टणमणा ऊठती 'अरेक अरेवाळिय री निजर अचाणचक री आथूणें पासं ढळतें सूरज कानी गइ । उणनं उठीनं सू कोई आवतो दीसियो । वी वीजोडं साथ्या घक मू डो कर'र कैयो, अरे आथूण कानी सू आ क वलाय आव है? किरडकावरी-सी ।”

वीजोडं अरेवाळियें पण उठीन देख'र कयो 'हा पण आ क जिनावर है ! पैला तो कदेई इसो जिनावर इण रोही मे देखण मे नी आयी ।”

तीजोडं आप री नसनं ऊची करतं, देख'र कैयी, 'नैच ही आँ तौ भाई, कोई ओपरी जीव लाग्यी मान तो ।”

चौथें पण देख'र कैयो, सगळा सठा गेया, इसी नी हुव क ओ कळ्ळ'र मायनं पड जावं ।

लरडिया री निगै राखज्यी, आ नी हुव ओ उठार ले जाव अर आपा वाई रो-सो मू डो किया देखता ही रेंय जावा । गंडी

सगळ्या आपर हाथ वसु राखज्यो घणी करै तो कडतू मे मचका दीज्यो ।

इण विरतातने देख'र सगळ्या ही अवाळिया भवदेणी सो ऊभा हुयग्या । सारा ही उण जिनावर कानी सावचेतो सू टोर लगाय ली ।

अक जणो बोल्यो “टागा तो इण रै दो हीज है ।”

दूजी अवालियो कयो “हाथ ही दा हीज है ।”

तोजोडो बोल्यो “लाग ता ओ मिनख जडो है ।”

चोथोडै कयो “ओ तो कोई डोलवेडोलो है ।”

अवाळिया इण तर बात करता हीज हा कं इत्त मे गेलारथू अवाळिया कने आयने ऊभो हुयो । वो अवाळिया सू हाथ जोड रामा-सामा करी पण अवाळिया चुपचाप यभा ज्यू रड्डा ही रैया ।

पहो चात्रक मिनख ही, वो जाणग्यो क 'अ' वापडा, राम-गम रै पडत्तर सार क जाणे ? पहो अवाळियान चला'र भळै पूडियो क्यू भाई ! घकली गाव कित्ता'क अळगी है ? में भालर वजते-सी स्यात उठ पूग जाऊला ?

पण अवालिया तो गेलारथू री बात ने काना हैठे मारग्या । उ तो मूडो खोल'र की कयो हीज नी । पही जाणग्यो कं अ' तो वोकानद है । वो भळै कयो “वीरा ! बोलो तो खरी, इया काई सतरा-वैतरा हुयग्या हा । में ही मिनख हीज हू ।”

अवाळिया अवे जावता बोलिया 'तू मिनख, किसो है ? जे तू मिनख है तो धार ओ अडो के ओडघोडो है ? त ओ ओळ-पिरोळी साग क्यू बणा रास्यो है ?'

बटाऊ बोलियो "आ तो म्हारें 'राम-नामी' नाव री चादर ओढघोडी है। इणनै देख'र थ कोई कावळ धारणा मत बणाप लीजो, नामण अर के साधु, अ डो चादर ओढिया करे है।'

इण बात पछ अंबाळिया रो घोजी बघियो क 'ओ पकायत होज आपा जेंडो मिनख है, दो हाथ अर दो पगा आलो।'

अंबाळिया बटाऊ रो थो-मो लेवण सारू पूछियो तू कुण बाज है ?'

पहा कॅयो में बाजू हू रामनेमी।'

अंबाळिया अचू भो करतासी' क पूछियो 'रामनेमी कुण हुब अर वो काई करे ?'

रामनेमी जाणग्यो क अंबाळिया साव 'सोळा मूठी खळमळा हुवें। वो भागें बोल'र कयो 'भाई रामनेमी ग्यानी मिनख हुब अर वो नी हुवें जिणरो ब्याव करा देवें।'

अर तो अंबाळिया अचभीज र बोलिया 'ब्याव करा देव। जद तो तू भी सायत ब्याव करा देवती हुवैला।'

रामनेमी हा भरतें कॅयो 'इणमे काई फरक है, में ब्याव पछ ब्यू नी करा देऊ, बिला जरूर में करा देऊ।'

[आ बात कोई सू छानी नी है कें अंबाळिया रो ब्याव बडो दोरो हुवें ब्यू के अंबाळियो फकत लरडी चरावण रें अलावा और की नी जाणें। वो तो जगळ रो राजा हुब घर गिरस्तो रो सारन वी काई जाण ? जद पण घणकरा अंबाळिया कबारा होज र्व, ब्याव खातर तरसता हीज रेंव।]

अंबाळिया नै रामनेमी जद आ बात कयो के 'में ब्याव करा देऊ' तो बात वारें वास्तें घणी सुवावती ही।

रामनेमी नें अके अेवाळिया कयौ क “म्हारै ई खंडतियै री व्याव करा दे, देखा ।”

रामनेमी कयौ “हां, करा देऊ, पण व्याव मे रिपिया अेक जेट नैडा लागै जका तौ लागेला इज दूजौ व्याव करावणौ म्हारै सारु आयौ । व्याव पकायत इज व्हे जाई ।”

रिपिया री बात सूरता ई अेवाळिया अपरै पावर माय सू काढ'र रिपिया री ढिगली कर दी अर कयौ 'ले, अे रिपिया पण व्याव व्हेण मे अब जेज नीं लागणी चाइजै ।’

रामनेमी व्याव करावण री पक्की हूकारी भर'र रिपिया री गड बाध ली अर पछे पाड नै ऊचा'र बठ सू 'चाल वूच की गीखा कान' व्हेग्यौ ।

इए बात नें कोई तीन-च्यार बरस बीत गया । रामनेमी मुफत री माल जाण'र रिपिया री सागीडो गफी किया अर मन मे प्रणू तौ ई राजी बिह्यौ । तीन-च्यार बरसा रै आतरै सू रामनेमी ओजू इणी मारग वैवती वा ई अेवाळिया न भळै क्यू टकरा जावै ती । रामनेमी देखियौ ‘अबे किमा वं अेवाळिया अठ मिळै है ?’ उण आवात कदमकाळ ई नो सोची ही कं वें हीज अेवाळिया उणनं भळै इणी मारग माथै मिळ जावला, पण जोग री बात कं वं उणनं अठै मिळ हीज गया ।

अेवाळिया रामनेमीन देखता पाण उण'रा कोड किया अर करण लाग्या क ‘अरे, रामनेमी आयग्यौ रै, रामनेमी आयग्यौ ।’ अेवाळिया रामनेमी रै च्यारू मेर कडौ जोड'र बैठग्य अर उणनं वूझना करी क ‘रामनेमी ! तू कंवती हो नी कं खंडतियै री व्याव करवा देऊला रिपिया देवणा म्हारै सारै हां पणें वो व्याव कठे ?’

रामनेमी छटियोडी रकम अर अतकर हुसियार, वा कयो 'ब्याव तो जद करा दियो हो । अवे तो खडतिये र छोरा भी ब्यप गियो । खडतियो म्हारै साथे चाल र आपरो बहूने लेय'र बयूना आवे । बापडो बाप र घरे खारसो करे । म्हन ता ले-दे ओळ वा मिळ उणर बाप रो क, "खडतोजी म्हारी बेटी ने अजताई लेवण नै कोनी आया । सो भाई, म्हारै साथे चाल र थारी बहू-टाररा न लेय'र आवे ।"

रामनेमी'रै केजे स खडतियो आपरै जोखेड माथ चढने आळी पित्तळियो पलाण माड'र रामनेमी साथे सासर न वहीर व्हेप्यो । ओ बड दूजे नै समझायो ।

रामनेमी र बडी माज हाथे लागी । जठे उणन खुरडा रगडन ऊ पाळो चाल'र आपर गाव जादणा पडतो । उठे अत्र वो लचपब लोचा-चालते पागळ माथे ड रका स लरका नेवता जावे हो ।

रामनेमी खडतिया न रस्ता मे समभायो क "सासर मे जवाई साथे लोग केई तर रो रोळ मसखरी करिया करे पण तू सेठी रहिजे । केई-केई गावा मे तो जवाई न लटकावण रो ही रीत है । वै आ देखणी चावे के म्हारे जवाई मे किती क ऊरमा है अर जवाई मार सावण मे किती क पबको है । कदे-कदे तो जवाई माथे लाठी ठीगी भी उठा लिया करे । अर लाता मुवका रो तो गिणती ही को करनी पण अ सगळा नेमचार पैलडी वार ई व्हिया करे । दूजी वार तो फूल रो छड़ी ही को लगाव ।'

रामनेमी खडतिये न भळे समभायो क 'तू सासर मे सुसरे अर साळा आग जर वण्यो रईजे । पीड व्हे तो रोवण रो मनाई कोनी, भाव घाप-घाप र कूकजे पण खडताराम सासर मे थारो

कुटाई ना'नी व्हेला जकी तने में पैलाई समझाय दी है ।
तू ध्यान राखजे ।”

रामनेमी री फाकी गिटावणो सोख सुण'र खडतियो बोलियो
“मने ठा है, थे इण बात सारू चिंता ई मत करो । मैं मार खावण
मे घणो मेठो हू । रावळिये खेता मे पैला जद कदेई म्हारो अंधेड
वडियो है तद म्हागे अंडी छिंताई कई बिळियाहुयोडी है ।
सासरिया तो वापडा कित्तो'क वूटला, मिरचा रा लोधिया तो दावण
सू रया ।”

रामनेमी बोलियो “खडता, अक बात ओजू सुणले कं तने
जद वे लढकावे तद तू इया भळई बोलतो रेइजे क थारी वेटीने
मेलद्यो थारी वेटीने मेलद्यो, मेलिया हीज सरसी, अब अठ में
ताई कोनी छोड । म्हारे साथे मेलिया हीज सरसी ।”

‘अक काम तने और करणो पडला ’ रामनेमी कयो आगले
गावसू पाचे'क किलो मोतीचूर रा लाडू तने भळं लेवणा पड ला
जका तू थारे टावरिय ने भुळा-चुपळा'र खुवावतो रइज, पण
थारी लुगाईने तू पला मत बतळाइजे । उणसू तो तू थारे साथे
वहीर करा'र लाया पछ होज बोलजे ।’

खडतियो रामनेमी कयो ज्यू-ज्यू हकारो भरतो रयो ।
वो आगले गाव र मोदी कने सू लाडूडा तुला'र साथ ले
लिया । इतर में वो गाव आयग्या जठे रामनेमी न खडतिय
रो सासरो ठावो करणू है । रामनेमी सू कोई बात छानो कोनी ही
वो खडतियेन एक अड घर सामी सीध करी जिणमे उण घर
री वेटी आपरे सासरे सू आयोडी ही अर उण रे दो-अके साल
रा अके टावर हो । घर रा दूजा मिनख खेता मे गयोडा हा, पण
वेटीने आसूदगी सारू घरे छोडियोडी ही, जिकी घर रो ऊपर

सापर रा काम कर लेवे अर पीर मे च्यार दिन मोराई सू काट लेवै । घणो अब्रखो काम नी करणो पड ।

जाट रो ओ गुवाडो बडो जगो हो । अठ आया-गया पावणा रो मरबरा सानरी हुया करती ।

रामनेमी दूर मू होज आगळी रो सोध कर'र खडतिये न ओ घर बतायो अर कँया 'उण घर मे जकी वेटो माणस ह वा तो थारो लुगाई है अर जको टाबर वठ रम है वो थारो वेटो है । तू उणी घर मे जाय'र धारें वत रो पलाण उतार दोजे ।

खडतियेने अँडी सोध कर'र रामनेमी आप तो खाथा-पाथा पग उठा'र आगलो गाव साकड करियो ।

खडतियो आयो अर उण घर मे आप रो ऊठ जखायो अर पलाण उताद'र बारली तिरवारो मे जा, डेरा दिया । खडतियो गाभै-लत्त सू मागोपाग सजियो-बजियो हो । काना मे मुरकी-साकळ गल मे च्यार आगळ चौडी गोप बाध्योडी अर डळो सां सोने रो मूरत पण पै'र राखी ही । पग मे कडियो-ताती ओपता लग्गावता हा, बीटी-मू दडी पण जगासर आगळिघा मे घात राखी ही ।

मानखै आळो बटाऊ जाण'र इण घर आळी वेटी पाणो रो लोटो, चिलम अर तम्बाखू आळो गटी उण र कन मेल दियो । थोडी जेज पछे न्याई रोटी थाली मे परस'र उणरें सामी जीमण साह लाय राखी । नानडियो पण आप रो मा रें साथै बटाऊ कन कई हेला आयो जिके मू वो खडतिय रें सँदो हुग्यो । खडतियो भी उणान नाडूडा दे-दे'र फेह घणो सँदो कर त्रियो । सँदो हुया पछे तो टाबरियो आप सू आप विरिया विरिया हसतो मुळकतो

खडतिये कने आवतो-जावतो रयो ।

खडतियो कणा ही तो टाबयिये नै खोल्धा मे बैठावे अर कणा हो कधोळें माथे चढा-चढा'र हिंडा दिरावे । जाणे आपरे टाबर नै होज रमावता हुवे ।

आथण री पी'र घर आला सगळा ही खेता सू धरै आया । वा खडतिपने देख'र जाण्यो क कोई मारग वगतौ वटाऊ है । गावा रा लोग पावणे-पही सू खासा हैत कर लिया करै जणा ही घर आळा खडतियेने सोरो राखियो जिया आपर निजी प्रसगी न राख । मिश्या री वेळू पण सगळा सायें ही करो । रातने सोवण सारु गाभे-लत्त' री भी जुगत पण सावळ ही करी । घर आळा खडतियेन आप र कने चौकी माथे सुवांण लियो । दिनुगे जद जीमा जूठी कर परा'र घर आळा खेत-पात जावण लाग जद वा खडतिये न वहीर हुवण रो क्यो । वा कयो "बटाऊ, रातवासी लियो जको चोखो पण अब असदे वटाऊ रो अकली तुगाई-पताई कन क काम ? अब तो बटाऊ नै रवानगी करणी ही चाहिजे ।"

पण खडतिये तो घर आळा री अंडी बाता वाना ही नी ढोळी जद वाने साफ केवणो पडयो क "बटाऊ ! थारो आगली मारग लेवो ।"

आ सुण'र खडतियो बोलियो ' मारग तो साथे मेल्या ले सू ।

घर आळा पूछियो "साथे भळे किणने मेलण मारु के'वे है ?

खडतियो बोल्यो "थारी वेटी न और किणने ।"

खडतिये री अंडी बाकल वात सुण'र घर आळो कयो 'बटाऊ प्रकल ठिकाण कोयनो के ? जाण, नी पिछाण, भलो, नी-तलो तने अंडो बेफेम री बात करता साज को आवनी ? खडतिये कयो 'इण

मे लाज रो कै बात है ' ब्याव हुया नै बरस च्यार हुवण लाग
है । अब म्हारी बहून थार घरे खोरसो करणनै को छोड़ नी ।
अबै तो थान मेनिया सरसी ।"

खडतियो तो आप री जाण मे साच ही बोल हो पण पराये
पुरस री अंडी बात घर आलाने भला कद आछी लाग ? वा
खडतियै रा पकड बूकिया'र गळगोते पर गळगोता दिया जिक सू
उण री अकल ठिकाण आ जावणी चाहिजे ही पण खडतियो तो
इए तक जाण्या बैठो हो क 'सासरं मे अेडा नेगचार तो हुया हा
कर ।' उए कैयो 'थे म्मनै भलाई किरा ही कूटा में पण थारा
बेटीन बहीर करा'र लेय'र ही जासू ।

अबै तो घर आना रो धीरज जायक टूटग्यो हो, जद वा
खडतियै नै सागीडो जरकावणो सुरु कियो । लात्ता रो लापसी अर
धुत्ता रो धी घालणो चालु कियो । वा खडतियै मे अडी करी जाण
अेवी डागरै न कूटता हुव ।

खडतियो मार खा र साथै ही तो कूक-गरळावै अर साथ हो
मेलदयो-मेलदघो कैव ।

खडतियो आपर आ लखणा सू इतरो घणो कूटीजियो क उण
रै हाडा रो ना'नो चूरमा बूटैग्यो । पण उण किसी मानी ?

छेवट आस गावन भेळो हुणो पडिया अर दाय आव जिका
ही इए जवाईन हरदुवारी अथवा गगारामो (लाठी) सू जुहारी
दवै । खडतियै माथै कई लोगा हाथ उरळा करिया पण वो तो आप
रै मन में पक्को हो ।

रामनेमी खडतियैने सागोपाग समभा'र पक्को कर दियो हो
आखे दिन ओ गोधम रासो चालतो रयो । खेता में लावणी करण

री बेला ही पण उपाय कै ? घर आळा रँ अणहोई आफत गळ वधगी ही ।

वा तो घणी ही खडतियेनँ लरडँनँ ठरडँ ज्यू ठरडघी, भुवायो, टिप्पा दिया अर घणो ही जतरायो पण खडतिये मेलदघो मेलदघो री लवा छोडो ही नी ।

छेल स्याणा आदमिया घर आळा नँ कैयो कै 'इया मत करो, नेटन आदमो रो काम है जे 'काई किसी हुगी तो आपा सगळा वध्या मराला । धीरज राखर कोई मारग काढो ।'

गाव रँ चौघरिया चौखळे रँ पचा न भेळा करिया अर सगळी बात वा पचा न सामँ राखी ।

पचा भेळा हूर खडतिये री समसुत बात बठै ही घ्यान सू माड'र सुणी । घर आळा सू पण सारी बात दरियाफत करी । पछे पचा आपरँ मन मे वई ज्यू करी ।

पंचा घर आळा री बेटी रँ सागी घणीनँ बुलायो । अबे पचा न्याव-तपास करणो सुरु कियो । आखर मे पचा रो फंसलो हुयो ।

पचा अँलान कियो कै घर आळी बेटी रो टाबरियो जिकँ री भोळिया मे जाय'र बठ जासो वो हीज उण टाबर रो बाप है अर जद पण उण रँ साथँ बेटी नँ मेलणी पडसी ।'

पचा गाव री गुवाड मे मिनखा री दो पात करी । एक पात मे खडतिये न बैठायो अर बीजी पात मे छोरी र पैली आळँ घणी नँ वठायो अर टाबरिये नँ दोनू पाता रँ बिचाळँ छोडियो ।

टाबरियो खडतिये सू नू वो-नू वो सँदो हुयोडो हो क्यू कँ उण छोरे न लाडूडा खुवाय-खुवाय अर लाड-प्यार सू रमाय—रमाय'र सँदो कर राख्यो हो । जद वो पाघरो खडतिये रो भोळि-

या मे जाय'र वठग्यो । अवे उपाय के ? मू डो तो पैला ही बळग्यो
हो जद फू क पण काय सू देव ?

घर आळा नै पचा रो फंसलो मानणो पडियो ।

भला ही पचा रो ओ अन्याव करतो न्याव हो पण मिनख न
कठे ही तो सबूरी करणी हो पडै ।

वाह रे रामनेमी, तेरा चम्मा चालचोडा के खडतियो बेट
सुधी बहु ले पडियो । सायरा कैयो क भगडो मा-बाप है । खड
तिये तो वा कर'र दिखाळी के अक घडी रो घामा-वूटो सगळ
दिन री सत्ता । ●

फगडळ

फगडळ नै जे कोई फगडळ कै 'वै' तो वो जाणै मनै बावू कै 'वै' अर जे कोई बावू कै 'वै' तो वो जाणै मनै गाळ कांठे । गाळ फगडळ र स्याबास अर स्याबास उणर फोट ।

फगडळ रो सागी नाव तो हेतियो हो पण चौकरं फगडळ नाव सू हेतियो आख सह्र मे नामी हुयो ।

फगडळ चें'र मोहरं सू फोरो वो होनी, केई वरत्ता वो ओपतो अर मूल हो । चें'र री ओपताई रं कारण हीज केई जणा फगडळ री सगाई करण मारू उणर घर रा चक्कर काटता वयू - क इणरा माइत वदेई आपरे नाव सू ओळखीज ता हा, पण सगाई करण री इच्छा सू आवणिया नै जद ओ ठा लागतो कै "कवरजी रा दसकत डागळ सूकै" जणा सगाई करणिया सागी पगा पाछा हीज वहीर हुय जावता ।

एकर सगाई करणिया मे सू कोईसै फगडळ नै पूछलियो वं "कवरजी थारं घर मे परण्योडो कुण ?"

फगडळ उथळी देवतो वोत्यो- "परण्योडा तो खालो म्हारा बापू है, वोजो म्हे तो अजे कु वारा हीज रं सा ।

फगडळ री गैलसफी बात सुण'र आवणिया मनोमन उथळो करयो कै "बापू ज परण्योडा नो हुवता तो था जिसा निघ कू कर जलमता ।"

वा एक दूसरे कानी देख्यो अर सनासेन मे बात करी क आ तिला मे तेल कोयनी, टाबर कोई बीजो ही भाळणो पडयो ।’

फगडळ कार मजरी खातर एक कमठाण पर काम लाग्या । पण भागा री वाज के फगडळ अडाण माथे सू हठे जा पडयो । पडणे सू फगडळ रो डील सगळो खळकीजग्या । (पग र) लागी । लोही आयग्यो । पीड तो पचठे हुवणी होज ।

कमठाण रो ठेकादार दूजा करतो कई भलो मिनख हा । उण ने फगडळ माथे दया आई । उण फगडळ ने पूछयो “अरे, फगडळ तू तो पडग्यो ।”

फगडळ पाछो बोल्यो— पडग्यो तो काई - पण ’

ठेकादार कैयो “अरे थारै तो लोही आयग्यो ?”

फगडळ बोल्यो “लोही तो काई आयग्या पण -- ’

ठेकादार दया रे सुर मे बाल्यो अरे थार तो पीड हुयगी दोसे ।’

फगडळ पाछो कयो ‘ पीड तो काई हुयगी पण ’

ठेकादार—‘ अरे अस्पताळ ले चाला काई ?

फगडळ—“इस्पताळ तो के ले चालो पण

ठेकादार कई उत्तावळो हुयर “अरे आ पण भल काई हुई ?”

फगडळ कयो “आ पण तो काई हुई पण ’

ठेकादार कई धीरज बधावतो बोल्यो ‘अर हे जिकी बात तो बता ।

फगडळ पण उणी भांत बोलते कैयो “हे जिकी बात तो काई कयू पण -- ’

ठेकादार कई गरमास परगट करत कैयो ‘कई तो कैयसीक’

पण फगडळ उणी भात बोलतं कॅयो- कईतो काई कॅ'सू पण'

अवै तो ठेकादार घ्यावस नाखतं कयो-अर, पण ही पण, पण
आ पण है के बलाय ?'

अव तो फगडळ चुडावण रा-सा दात काढतो बोल्यो-
'म्हारली माऊ (मा) कॅ'सी कॅ पडग्यो पण नू क्यू पडग्यो ?'

फगडळ नौकरी री पडताळ मे नोसरयो-रस्तं मे एक भायलो
मिल्यो । भायलो खाली नाव रो ही ज हो, बाकी तो फगडळ री
गैल सफी वाता माथ उणनै घणो मजो आवतो हो ।

भायलो फगडळन खाथा खाथा पग मेलता देख'र कॅयो
'फगडळ आज सिधसारु चाल्यो ?'

फगडळ कॅयो- 'नौकरी बीजो जोवलन',

भायलें पूछ्यो- 'नौकरी कायरी अर कठं करसी ?'

फगडळ उथळो करतो बोल्यो 'जिसी मिलसी अर हुयसी उठे
ही कर लेसा रे ।'

भायलो- 'तने उण जागा रो ठाव है क्या ?'

फगडळ- 'मनै तो को ठा न को ठेगो ।'

भायलो 'हू बतावो वा जागा ?'

फगडळ- बतावोनी भाईजी, भळं चाहिजं ही के ।'

भायलें कयो 'अरे तू फलाणें दफतर मे मुकडें वापू कने जा
ररो'र म्हारो नावले लीये, वावू तन साव सू मिलाय देसी,' भायलो
आगें ताकड देवतो बोल्यो- 'हा तो जा वेगो, पग उठा'र' भायलो
तो इतरो कॅय'र ग्यारतिया तेतीस हुयग्यो ।'

फगडळ लाम्बी डिग मेलता जा बडघो उण फलाणो दफतर

र मुकड बावू कने । फगडळ बावू री कुरसी रे लार नेडो सरक'र ऊभग्या ।

बावू फाइल सू जद आप री नाड ऊची करी तो गळी आळो फगडळ ऊभो है । बावू फगडळ ने ऊभो देख'र पूछयो- 'अर किया फगडळ, आव ।'

फगडळ - 'आयानी भाइजी ।'

बावू- 'बोल किया आयो ?'

फगडळ कैयो- 'पगा-पगा आयो भाईजी, और किया आवतो? हुवाई ज्याभ चढ'र तो पकायत ही को आयोनो ।'

बावू- 'पगा पगा आयो जिको तो सावळ करचो पण अ दरसण कू कर देय नाख्या आज ?'

फगडळ- 'दरसण तो देय नाख्या जिका देय हीज नाख्या ।'

बावू कैयो- 'अरे काम के आयो है जिकी बात बतावन ।'

फगडळ बोल्यो - 'नौकरी वेई आयो हूँ लगा देवोनी'

बावू पूछयो- 'काई नौकरी करसी ?'

फगडळ- 'ये कसो जिकी हीज कर लेसू ।'

बावू- 'तो सा'ब सू मिलाय हू ?'

फगडळ- 'भळ के चाहिजे, मिलाय देवोनी'

बावू फगडळने आपरे साथे लेयर सा'ब रे कमरे मे चिब कडखे कर'र गयो अर सा'ब सू जैरामजीरी कर परी'र फगडळ सारु नाकरी री अरजकरी के 'इएने रोटचासर करो ।'

सा'ब सगळी वातने जाण'र बावूने तो पाछा मेल दियो अर फगडळ ने इटरव्यू सारु राख लियो ।

इटरव्यू लेव'त सा'ब फगडळ ने पूछयो- 'नौकरी करना

चाहते हो ?'

फगडळ—'हकारो भरतें कॅयो हमैसा ।'

सा ब—'पहले वही सर्विस की है ?'

फगडळ—'हा, सा करी है ।'

सा'ब—'कुछ पास हो ?'

फगडळ पास रो अथ कने जाण'र सा'वरें नेडो सरकतें कयो 'हा सा'

सा'ब—'सर्टिफिकेट है ?'

फगडळ कॅयो—'हा सा, है ।'

सा'ब पूछयो—'सर्विस कहा कहा करी है ?'

फगडळ उथलो करतें कॅयो—'वाली वाल मे सा ।'

सा'ब जाणकारी करतें पूछयो—'वाली वाल मे ?'

फगडळ हा सा, मे वालीवाल मे सर्विस हीज करचा करतो ।'

सा'ब हसतें सी पूछयो 'भैया, तब पास क्या हो ?'

फगडळ आपरी राफा खेलसी करतें कॅयो—'सा पास कदे कदे मे हीज दिया करतो ।'

सा'ब—'फिर सार्टिफिकेट काहे का है ?'

फगडळ—'सा एक तो सेविंग सर्टिफिकेट है अर बीजो अडाण मायें सू पडग्यो हो जणा मेडिकल सार्टिफिकेट लियो हो ।'

सा'ब हसी अर अचभें मे भरीजतो बोल्यो 'फिर नौकरी कसे करोगे ।'

फगडळ बोल्यो—'नौकरी अ गा करसू सा ।'

सा'ब फगडळ रो डोल माजतू जाणग्यो हो कं ओ इण डोल रो है जद वा कॅयो—'बस, हो गई तुम्हारी तरफ सू नौकरी ?'

फगडळ आप री भत्ती भूवा रँ सासग मू फू फाजी फकीरचद जी रँ फोत पाया पचट्टै मिलण सजा'र पाट्टी आवती विरिया बालाजी री ठेसण सू टिगट कटा'र गाडी मे चढया । डव्व म छीड ही । सो'ही डव्वो खालो सो पडियो तो ही पण फगडळ आप री जूत्या खोल'र बाधे उपरले घोटिये नँ डव्वे री फरस माय विद्या'र हेठे बैठग्यो । हूजा मुसाफर आप री मोय मे बैठे हा व पण उण नँ कपू कँवता हा के आप हेठे नी बैठ'र सीट माये विरा जो सा । मुसाफर आपस मे बाता करता हा ।

एक छोरलो, हुवतो-सो मोटियार पण वा मुसाफिरा भेळा बैठो हो, उण एक बूढे आदमीने कँयो -“मैं कवि हू, आप क'वो ता आपने कविता सुणाऊ ?”

डेण बोल्यो-“भाई, तेर जे कविता सुणावण सारू समीह उप डग्यो है तो सुणापरो, क्यू उधार राख है ।”

छोरँ कविता बोलणी सुरु करो-

“कोरो कोरो आख काढे भाटो वा'भो के ?

तेरो बाप चौधरी मने मार लेसी के”

डेण छोरँ ने बीच मे ही टोकते कयो-- “भाया तू कितरँ वरसा रो है ?”

छोरँ उत्तर दियो-“मैं तो कोई तीसेक साल रो हू ।”

डेण-“आ कविता मैं भ्हारो समझ पकडया सू लगा'र आज ताई सुणता आयो हू, कविता केठाक तेरी ही बणायोडी हुवला ।”

डेण री बात सुण'र - कवि बणयोडो छोरो ढाई भू एिया री ढील सू कि'नो कट ज्यू कटग्यो । वो तो भळ बोल्यो न को चाल्यो बोलो-बोली आपरो मू डो फोर'र बैठयो रयो ।

पण फगडळ रै आतरै वैठयँ रे मचमचो मी चालगी । वा
डेण कन आय र बोल्यो-“तो मै सुणाऊ आपन कविता, पला रो
सुण्योडी हुवँ तो बता देया ।

डण कयो- तू ही थागी सुणा परी क्यू बाकी राखँ । पैला रो
सुण्याडी हुयसी तो तने पण कैय देमा ।”

फगडळ जच'र कविता सुणावण लागो-

“इकतारो खडताळ लीनी, भजन गासी के

भजन रै पस्ताप सेती सुरगा जासी के

बडा सारो वीटो वाघ्यो, गाव जासी के

गोजियँ सू लोट काढ, टिगस कटासी क

दस पाच रिपिया माग्या, नाहा पासो के

देऊ ला तो पाछो देवण, काको आसी के

फगडळ कविता सुणा'र डण कानी आपर कोइया रो सळा

खाच'र पूछ्यो क-“बतावो, आ सुणी हो के कदेई ?”

डेण बाल्यो-कूडी नी कुवाव राम, आ तो आज ही मुणी है ।

फगडळ फेर बोव्यो- “अर आ, जिको मै आपन सुणाऊला ।’

डेण कयो-‘ कैया जाणीजँ ।”

फगडळ भळै आपरो कविता सुणावणनेँ लाग्यो जच'र । आ
कविता भाव मत हुवो पण तुकबदी तो जोसोरो करण आळी ही ।
मन बिलमावण आली कविता नै सै'ही सुणनो चावँ । फगडळ रो
कविता आख डव्य र वदा सुणी । कविता इया ही-

खावणो चाहिजँ बोरियो हुवो भला ही आलो ही

चूसणी चाहिज आइसक्रीम पडो चायँ पाळो ही

वैठणो चाहिज छाया माय, हुवो चाये ढाळो ही

मूतणो चायें छात माथ, पडो चाये नाळो ही
 डुक पैमली भार देणो, हुवो चायें साळो ही
 करणो चाय आखर फिचर घर मे हुवो घाळो ही
 फगडळ आ सुणा'र डेंण न पूछ्यो ही- 'आ कदेई मुणी के ?'
 डण हसतो सी बोल्यो - 'आ तो आज हो थारें मू 'ड सू सुणी
 है ?''

फगडळ बोल्यो- 'लो, आ और सुणो अर जे पैला कदेई सुणो
 हुवें तो बताय देया ।'

डेंण बोल्यो--- 'तू जवरो भी, थारो कैंयोडी स्यात ही कद
 सुणी हुवें ।

फगडळ भळें सुणावणी सुह करी -

खाणी चायें आलो चीज, हुवो भला ही गोवर ही

पजाय देणी आगलीन हुवो चायें भोभर ही

खाणो चाय जै'र विष हुवो चाय जाभर ही

मार देणो जबर डुक हुवो नाराज सौ वर ही

फगडळ री बविता सुणा'र डेंण पल डे कवि नें कैंयो

मोटचार, कविता नाव इणरो है । आ खुद री बणायोडी
 कविता है थारल दाई चारी बरघोडी कोनी ।" ●

सपादक री प्छडी

रुळी मोद में थोबडो होबडो सो सुजाया राजस्थानी भापा रो कूडो माघ पिंडत बण्यो, भूण सो भोड ऊचो करघा कू जडै री पावलो साढ-सा होट छिटकाया ऊधे खुरडा मे उतरयोडा खू सडा पैरया एक जावक सू गलो-सो आदमी सडक रो भो विगाडतो-सी जावै हो ।

उणन देख'र एक जण मन कयो- "ओ है वा सपादक, जिको आप रो मूरखता रै माफडदाने मे राजस्थानी भापा न सिणगार री भोळप मे ऊनी घाघरियो पैरा'र सासण नाच नचावण री गईआळी चेष्टा करे ।

उण गईयाल मिनखन देखता ही मन छीकणी-सी आवणन लागगी, तोही पण में उणन हाथ रा झालो देय'र हैलो पाडयो के 'भाईजी थोडा पग ढाव्या ।

म्हारें हेन माथे वो ढबतो गयो पण आपरें चेंरै री सळ सारतो बोल्यो- "कहिये कहिये पीछे से आवाज क्यू लगाई ?"

सपादक री बोली रा अँ बाजा सुण'र म्हारें सू नी रयीज्यो जणा म बोल्यो "सपादकजी, मै तो खानी हैलो ही मारयो है, लोग देसी लारें सू बाग ।"

सपादक आप र नाक माथे सू चस्मे री डाढी ऊतारतो बोल्यो "बाग क्या होती है ?"

मैं कयो - "बाग होती है जणीताळो सिर ।"

वो बोल्यो— 'क्या मतलब ?'

मैं पात्रा कयो 'मनलब चटक सी समझ मे वो आवनी ।'

मैं उणरै भापा ज्ञान माथ अबभो करयो अर बोल्यो—'ल्यार्ई'

वो बापडो त्याई' रा मतलब कद समझनो हा, वो बोले ता के बोल । आखर मैं हो उणन चला'र पूछयो—'आप निकाळो हो राजस्थानी भापा मे छापो ?'

वो म्हारी इण वूझना माथे राडरा सा दात नाडतो बोल्यो—
'जी जी जी ।'

मैं पूछयो — 'नीमरग्यो परो

वा बोल्यो—'अभी नहीं, अभी नहीं अभी देर हैं ।'

मैं कयो—'काधिया तो आयग्या हुवला ?'

उण कयो--"जी नहीं, वो तो नीकरी ट्योउवर चला गया ।

म भळै उणरै राजस्थानी भापा ज्ञान माथ म्हार पटपड म ली अर म मनमन मे सोच्यो क 'आछो विध लागी है फटग्या पाव घाट पसेगी सू 'वो मन पटपटी मे खाता देख'र सैतरो वतरो हुयग्यो अर सू दै साड ज्यू म्हार कन नाड नारया ऊभा रैयो ।

म भळै उणन चला र पूछयो 'आपन राजस्थानी सरासरी सी आव दीसै ?'

म्हारी इण वात माथे वो आपरो सगलो शरीर काद म हुयोडी कुतडी दाई फडफडावै ज्यू फडफडा र बोल्यो -"वासा वा सरासरी क्यू नी आतीं । हमरो जलम तो अठेको ही है, सिर्फ हमारी नानी को जलम आसाम को है । जिसे क्या हुवो ।"

म उणरी अँडी वरी वाता सुण र मन मे सोच्यो कै—'तेरे

सू बात करने में ही तसियो है । टाळ, टालोकडजी देव ।

अब आप ही विचारो क अँडे सपादक सू राजस्थानी भाषा आपरो एक रुपतारं डाले में डलं तो कू कर टलं । अनाडी वेदरं हाया में पडयाडो रोगो ठोक हुयतो इसँ सपादका सू राजस्थानी भाषा रा भलो हुवं । ज किणोनें सात्रदेशिक राजस्थानी भाषा रो ज्ञान नहीं है तो उणनें आपरो क्षयिय बोली में हीज लिखणो चाहिज ।

राजस्थानी रा अँडा केई लेखक है जिका अँपरो में दूढाडी में का हाडीती में लिखं उणनें कृण दास देवं । अँडे लेखण सू ओ फायदो जरूर हुव कं बोजे क्षत्र रा लेखक उठे रं सबदा सू प्रयोगा सू सँदा हुव । पण भाषा नै कचावणी आद्यो बात कोयनी ।

अवं तो खैर, ओ सवाल को रैयोनी क किणी एक रं कचोया भाषा खराव हुव अर एकरं लिख मुजव नै ही सब भाषा माने क्यू क अवं राजस्थानी में लेखका रो कमी नी है चारू वला सू हीज राजस्थानी में लिखीज रया है अर पोथ्या पण छाप रैयो है शिक्षा विभाग पण राजस्थानी रो पोथी सालू साल छाप अर केई विश्व-विद्यालय में पण राजस्थानी रो भणार्ई चालू हुयगी है । ●

